वाप्कोस दर्पण

2 मी. डायमीटर आरसीसी पिलिंग कार्य,
पुनातसांग्छू-I हाइड्रो इलैक्ट्रिक परियोजना, भूटान

त्रैमासिक गृह पत्रिका

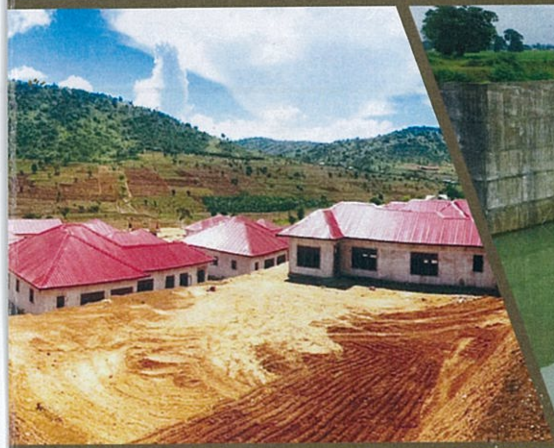

आवासीय घर, कार्यालय, सामग्री परीक्षण प्रयोगशाला तथा संबद्ध अवस्थापना - स्थल स्थापना कार्य सहित "किरेहे जिले, म्यांग क्षेत्र में सिंचाई व जलग्रस्त प्रबंधन का विकास", रवांडा

कुंचाउंग सिंचाई स्कीम में विद्यमान वियर, म्यांमार

कम्पोंग स्पू प्रांत के कोंग पिसे तथा बसेडट जिलों में अन्वेषणात्मक ड्रिलिंग, कंबोडिया

अंक 93, अप्रैल-जून 2019

सीएमडी, वाप्कोस श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय जल शक्ति मंत्री का स्वागत करते हुए

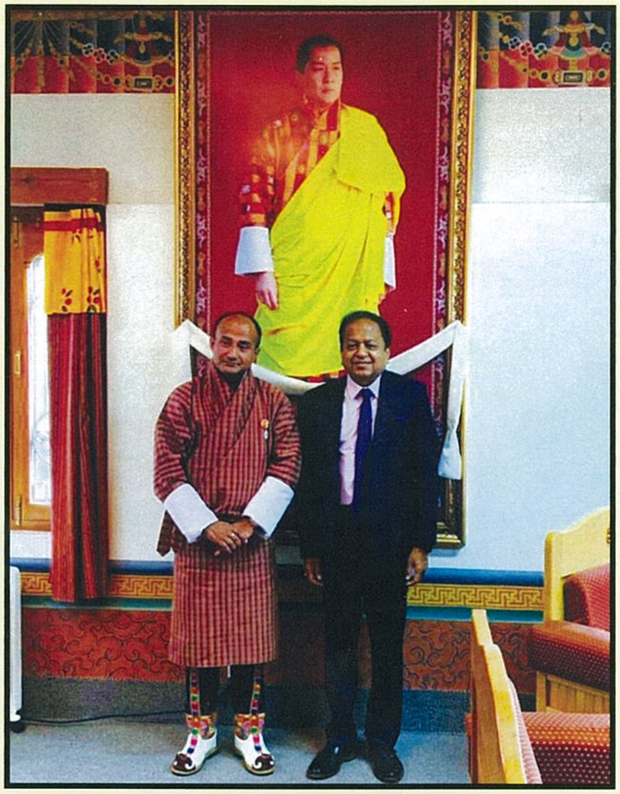

श्री लोकनाथ शर्मा, माननीय आर्थिक मामले मंत्री, शाही भूटान सरकार के आमंत्रण पर सीएमडी, वाप्कोस उनसे भेंट करने थिम्पू गए

सीएमडी, वाप्कोस ने श्री केशब मेहता, माननीय जल संसाधन मंत्री, असम सरकार और अविनाश जोशी, प्रधान सचिव, जल संसाधन के साथ वाप्कोस कार्यालय, नई दिल्ली में भेंट की

वाप्कोस दर्पण

अप्रैल से जून, 2019

अंक - 93

	इस अंक में	पृष्ठ सं.
<u>संरक्षक</u>	अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	1
आर.के.गुप्ता	संबोधन - निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	2
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	सम्पादकीय - प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	3
	राजभाषा गतिविधियां	4
<u>तकनीकी संपादन सलाहकार</u>	अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2019	5
अमिताभ त्रिपाठी	कविता - पानी	15
वरि. कार्यकारी निदेशक	लेख - पणिनी	16
	लेख - गुलाब गुणों की खान	19
<u>संपादन मण्डल</u>	कविता - जिन्दगी	20
अनुपम मिश्रा निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास **डा. डा. आर.पी.दूबे** वरि.कार्यकारी निदेशक	वाप्कोस द्वारा स्वर्ण जयंती समारोह के पूर्व समारोह पर "स्व्च्छ, स्वस्थ, समृद्ध"- "हमारी नदियां, हमारा भविष्य" और "वृक्ष लगाएं-जीवन बचाएं" का अयोजन दिनांक 24 जून, 2019	21
अमिताभ त्रिपाठी	कविता - मेरी किस्मत की मीठी लकीर	25
वरि. कार्यकारी निदेशक	लेख – B +	26
	लेख - गुरू या किताब से ज्यादा सिखाती है जिन्दगी	29
संपादक निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.)	50वें स्वर्ण जयंती समाहरोह के अवसर पर सिरी फोर्ट आडिटोरियम में "Transcending Boundaries – Touching Lives" कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 26 जून, 2019	31
	लेख - बच्चों में लीडरशीप	35
उप संपादक	जय चंदीराम - भारत की प्रथम टी.वी. प्रोड्यूसर	37
डी.के.सेठी	कविता - रिश्तों का अंतर-जंतर	40
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)	लेख - विद्वता	41
	कहानी - चालाक चोर	44
सहयोग	लेख - पानी हमेशा घूंट-घूंट करके और बैठ कर पिएं	47
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक	लेख - कैलास मानसरोवर	48
शारदा रानी, वरि.सहायक	आपके पत्र	52
(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)		
केवल आन्तरिक वितरण हेतु		

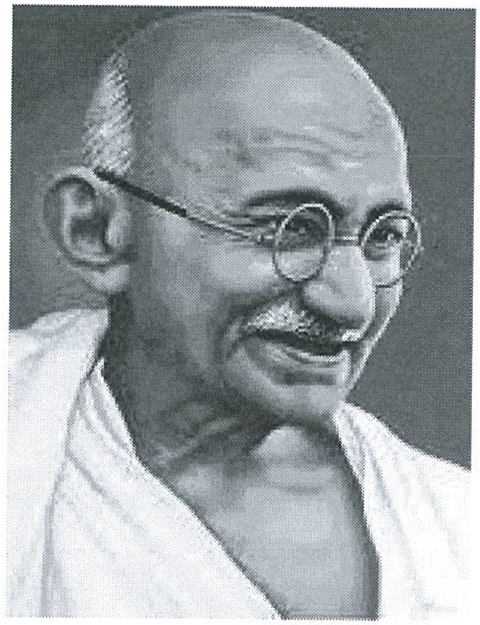

आदर्श का पालन करने के लिए जी-तोड़ प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन यदि वैसा करने के बावजूद मन पर अंकुश न रह सके, तो मिथ्याचारी न होकर - जो कुछ बन सके उससे संतुष्ट रहना चाहिए। ऐसा व्यवहार करने वाले लोग बड़ों के आदर के पात्र हैं।

- सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (खण्ड 56), पृ0 167

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

वाप्कोस की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" का 93वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। राजभाषा हिंदी के प्रति कार्मिकों में उत्साह व जागरूकता बनाए रखने में यह पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह प्रसन्नता की बात है कि हम अपने तकनीकी दायित्वों के सफल निर्वहन के साथ-साथ राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में भी उन्नति कर रहे हैं।

हमारे व्यवसाय के क्षेत्र में व्यापार की अनंत सम्भावनाएं हैं। इस क्षेत्र में व्यवसाय एवं तकनीकी स्तर पर कई परिवर्तन हुए और हमें इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए ही अपना कार्य करना है। हमें आज इस युग में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के बीच उत्साह व सकारात्मक सोच जैसे गुणों के साथ प्रगति के पथ पर सतत् रूप से अग्रसर होना है। हमें कार्यालय के अपने अन्य कार्यों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी में अपने कार्यालय का कार्य करते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त करनी है।

मेरा विश्वास है कि सरकारी कामकाज में आसान हिन्दी का प्रयोग करने से हिन्दी भाषा की स्थिति और अधिक सुदृढ़ होगी। इसके लिए हम कठिन शब्दों का प्रयोग न करके आम बोल-चाल के शब्दों का ही प्रयोग करें। अत: कार्यालय का अपना कार्य अपने मन से मातृभाषा हिन्दी के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाते हुए करें इससे आपको आत्मिक खुशी के साथ-साथ मातृभाषा के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने की खुशी भी मिलेगी।

आर. के. गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

संबोधन

भाषा किसी भी देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है। अपनी भाषा में मूल रूप से लिखे लेखों से अभिव्यक्ति सरल, सहज व स्वाभाविक होती है। भारत जैसे देश में हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखती है। राजभाषा हिन्दी में सरसता है और इसका शब्दकोश व्यापक एवं समृद्ध है।

हमने अपने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए निष्ठापूर्वक प्रसास किये हैं। आज अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है जिससे हिन्दी का महत्व और भी बढ गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ी व पढ़ाई जाती है। आज कोई भी राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय कम्पनी जिसे भारतीय बाजार में पकड़ मजबूत करनी है वह हिन्दी के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकती। निश्चय ही यह हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने को परिलक्षित करता है।

मैं मानता हूं कि अनुवाद की हिन्दी से बचते हुए यदि हम अपना कार्य मूलरूप से हिन्दी में करेंगे तभी हम सही अर्थों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने में सहभागी बन सकते हैं। मुझे आशा है कि आप सभी के सहयोग से हम अपनी राजभाषा हिन्दी को एक नये शिखर पर पहुंचाने में सफल होंगे।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

संपादकीय

आधुनिक व्यावसायिक वातावरण उन व्यवसायों को पुरस्कार प्रदान करता है जो उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों के उत्पादों को शीघ्र विकसित करने में सक्षम होते हैं। कुछ उद्योगों में ज्यादातर कर्मचारियों की नये विचारों के साथ आने की प्रौद्योगिकी संबंधी प्रभावी क्षमता कम्पनी की सफलता और असफलता का निर्णय करती है। क्योंकि किसी भी संगठन की सफलता कार्मिकों की कार्यकुशलता व उत्पादकता पर निर्भर करती है।

संगठन के उन्नयन के लिए जरूरी है कार्मिकों द्वारा कठोर परिश्रम व सौहार्दपूर्ण वातावरण जो उसकी संरचना को मजबूत ही नहीं बनाते बल्कि उसके आकार अथवा स्वरूप को आकर्षण एवं कार्य को रोचक भी बनाते हैं। यह सत्य है कि भारत की "वसुधैव कुटुम्बकम" की परम्परा रही है। परन्तु आज प्रतिस्पर्धा के युग में हर व्यक्ति या संगठन श्रेष्ठतर बनने का प्रयास कर रहा है।

कार्यस्थल पर सौहार्दपूर्ण संबंधों से श्रम उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ कार्य में आने वाली कई समस्याओं का समाधान भी आसानी से हो जाता है। किसी भी संगठन की सफलता में सकारात्मक नजरिया उसकी प्रगति में विशेष स्थान रखता है और संगठन उत्कृष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति आसानी से करते हुए सर्वश्रेष्ठ उत्पादकता को प्राप्त करता है।

हम एक दूसरे का सहयोग करते हुए कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते हुए हर मंजिल को हासिल कर सकते हैं। मेरा आप सभी से विनम्र आग्रह है कि इसी भावना के साथ कार्य करते हुए हम अपनी कम्पनी को शिखर पर ले जाएं।

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)
एवं संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरूग्राम के तत्वावधान में अगस्त 2019 में आयोजित किये जाने वाले राजभाषा सम्मेलन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह संयुक्त रूप से आयोजित करवाने वाले वाप्कोस सहित नराकास, गुरूग्राम के आठ सदस्य कार्यालयों की समन्वय बैठक दिनांक 07.06.2019 को निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस की अध्यक्षता में की गई।

- दिनांक 13.06.2019 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान से सेवानिवृत्त उप निदेशक श्री भूपिन्द्र सिंह भी उपस्थित थे जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियमों/अधिनियमों के बारे मे जानकारी दी और नोटिंग/ड्राफ्टिंग का व्यवहारिक अभ्यास भी करवाया गया। इस कार्यशाला में 40 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

- जल शक्ति मंत्रालय की दिनांक 25.06.2018 को आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- दिनांक 28.06.2019 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा. व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 20.06.2019 को वाप्कोस के गुरूग्राम स्थित प्रशासन प्रभाग तथा दिनांक 27.06.2019 को आई टी प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

****

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2019

योग एक यात्रा है जिससे स्वयं के माध्यम से स्वयं को प्राप्त किया जाता है।

Yoga is the journey of the self, through the self, to the self.

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण में कहा था कि "योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। योग एक यात्रा है जिससे स्वयं के माध्यम से स्वयं को प्राप्त किया जाता है। योग दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। योग हमारी बदलती जीवन-शैली में चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में हमारी मदद करता है। आईये इस अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अंगीकृत करने की दिशा में कार्य करें। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है।

वाप्कोस द्वारा श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में 21 जून, 2019 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें योग टीचर के मार्गदर्शन में मंत्रालय व वाप्कोस के कार्मिकों ने बड़ी लगन व उत्साह से विभिन्न योग किये और योग अभ्यास का भरपूर लाभ उठाया। वाप्कोस के सभी फील्ड/विदेश स्थित कार्यालयों में योग कार्यक्रम आयोजित किये गए।

मंत्रालय तथा वाप्कोस के भारत व विदेश स्थित विभिन्न कार्यालयों में आयोजित योगाभ्यास की झलकियां

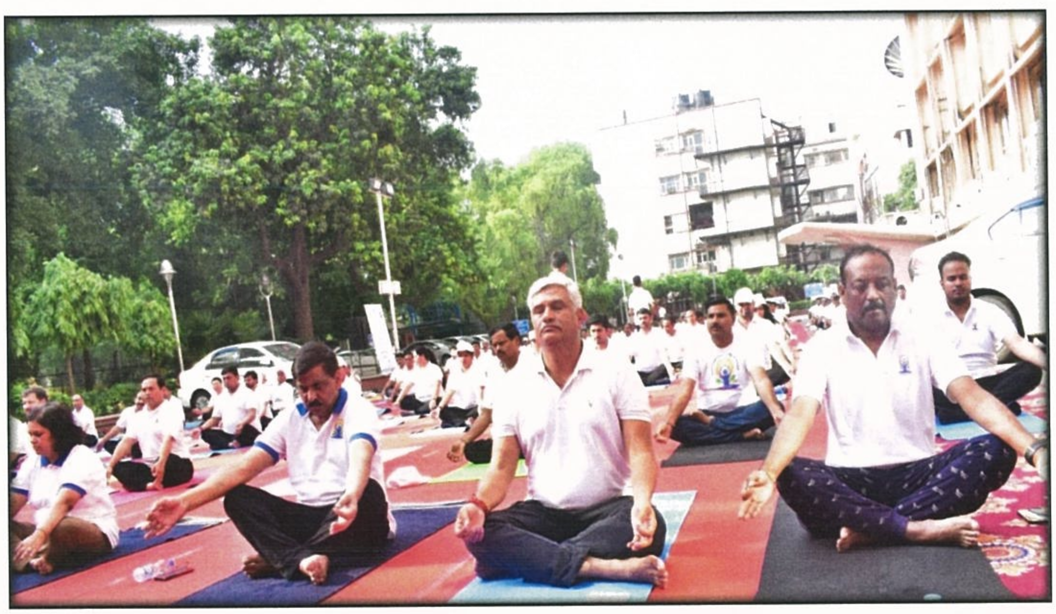

माननीय जल शक्ति मंत्री, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय व मंत्रालय और वाप्कोस के कार्मिकों के साथ जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली में योगाभ्यास करते हुए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली में वाप्कोस कार्मिक

भारतीय दूतावास, लाओ पीडीआर द्वारा लाओ पीडीआर में दिनांक 15 जून, 2019 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। वाप्कोस द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में लगभग 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

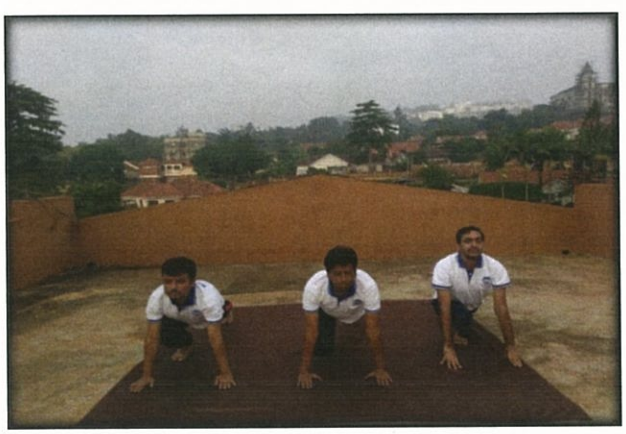

वाप्कोस युगाण्डा

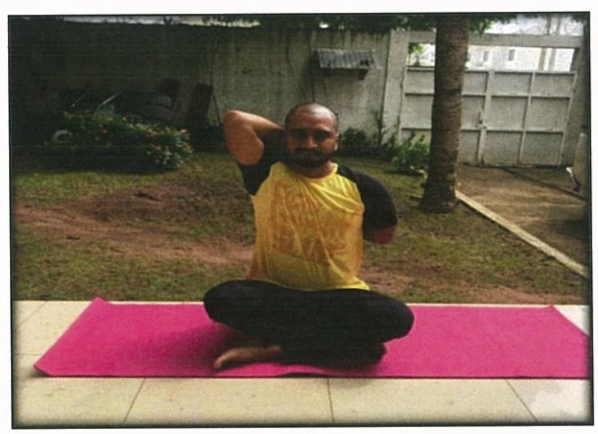

वाप्कोस बेनिन

वाप्कोस

वाप्कोस भूटान

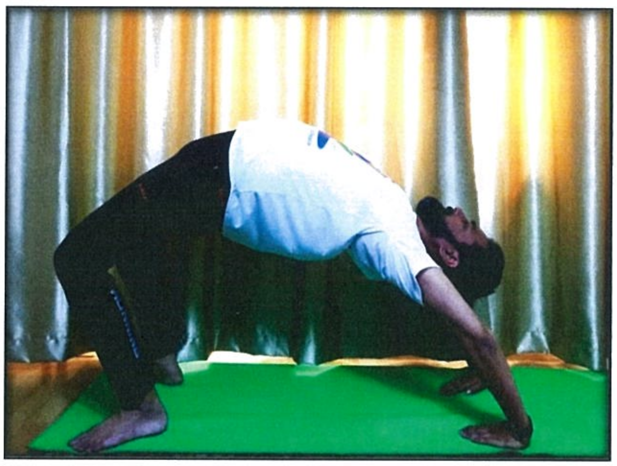

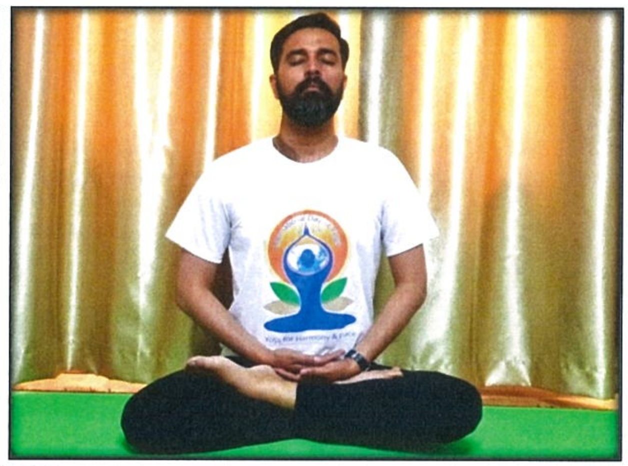

वाप्कोस मंगोलिया

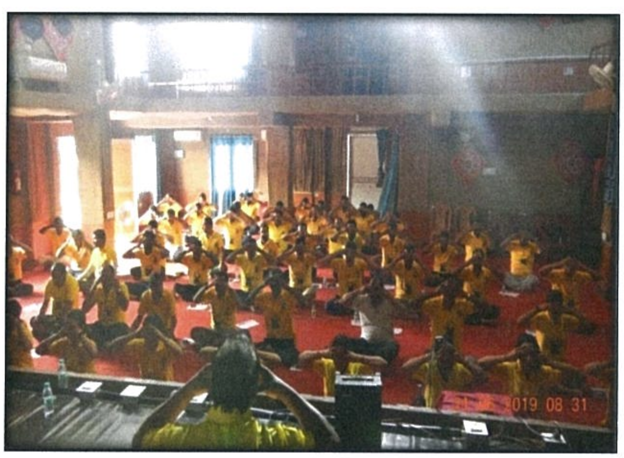

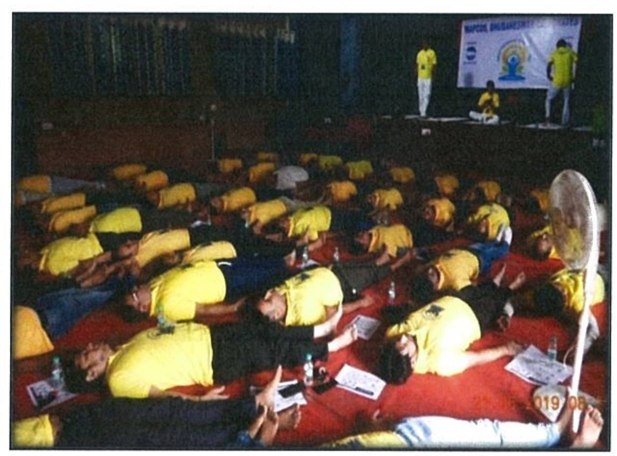

वाप्कोस ओडिशा

वाप्कोस गांधीनगर

वाप्कोस होशंगाबाद, भोपाल

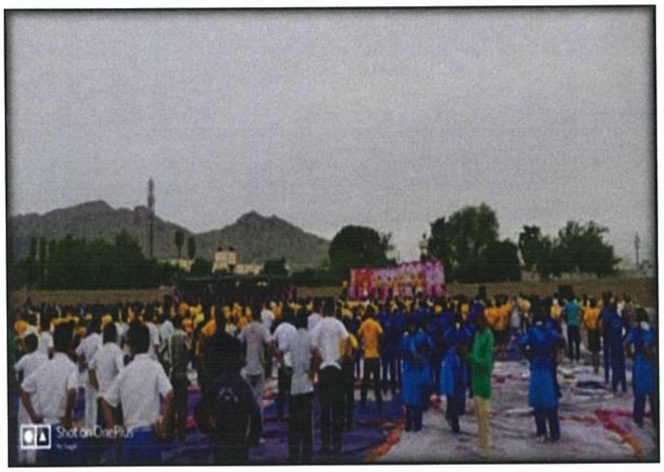

वाप्कोस कोलर

वाप्कोस कोलकाता

वाप्कोस देवास

वाप्कोस बंगलूरू

वाप्कोस रायपुर

वाप्कोस चैन्नई

वाप्कोस चण्डीगढ़

वाप्कोस पुरूलिया

वाप्कोस भुवनेश्वर

वाप्कोस शिवपुरी

वाप्कोस रांची

वाप्कोस नागपुर

वाप्कोस भोपाल

वाप्कोस Sehore, मध्य प्रदेश

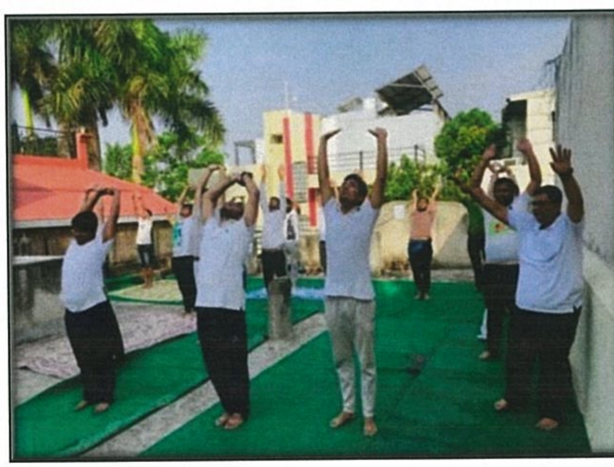

वाप्कोस इन्दौर

वाप्कोस ग्वालियर

वाप्कोस हैदराबाद

वाप्कोस खाण्डवा, मध्य प्रदेश

वाप्कोस रत्लाम, मध्य प्रदेश

वाप्कोस उज्जैन, मध्य प्रदेश

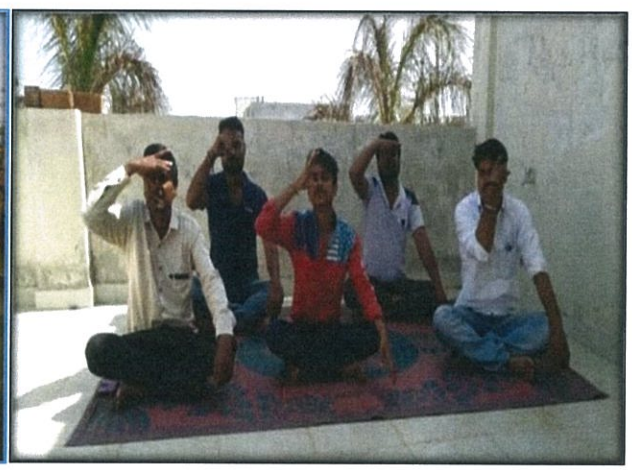

वाप्कोस विदिशा, मध्य प्रदेश

वाप्कोस कोचिन

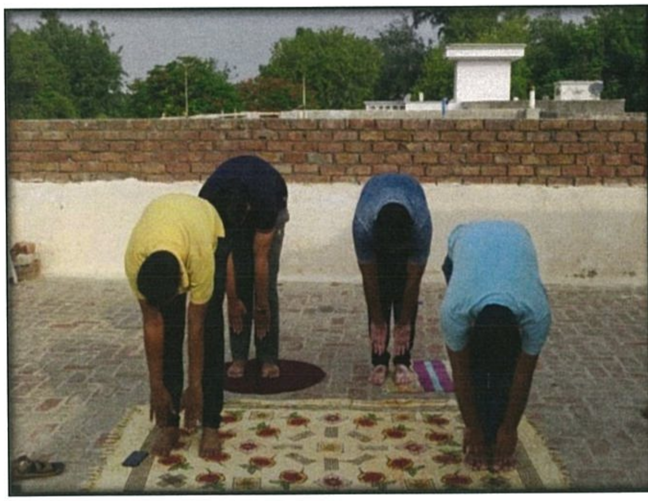

वाप्कोस हिसार

वाप्कोस लखनऊ

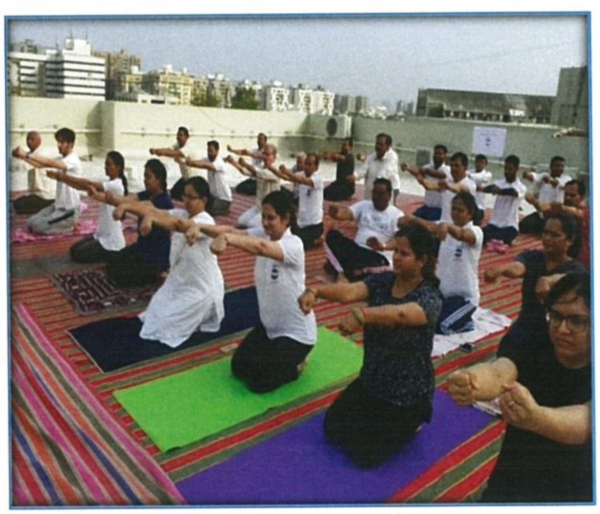

वाप्कोस अहमदाबाद

वाप्कोस विशाखपट्टनम

****

- **योग वह प्रकाश हे जो एक बार जला दियां जाए तो कभी कम नहीं होता। जितना अच्छा आप अभ्यास करेंगे, लौ उतनी ही उज्जवल होगी।**

- **योग से तुम दोस्ती कर लो, अपने हर दर्द को खुद दूर कर लो।**

पानी

डा. उदय रोमन
परियोजना प्रबंधक (मध्य क्षेत्र)

कहीं लपक लपक, कहीं टपक टपक, कहीं झपक झपक, कहीं छपक छपक
कहीं मंदिर में कहीं मस्जिद में, चौबारे में गुरूद्वारे में
कहीं डमडम में कहीं संगम में, काबे के आवे जम जम में
कभी खाई में गहराई में, कभी बर्फीली ऊँचाई में
कहीं खेतों में कहीं रेतों में, ठंडे पानी के सोतों में
कभी रेलों में कभी मेलों में, कभी गोलों में कभी खेलों में
कभी ओलों में कभी शोलों में, कभी कवि रहिमन के बेलों में
रहिमन पानी राखियों बिन पानी सब सून, पानी गये ना ऊबरे मोती मानुस चून
कभी दंगों में, कभी रंगों में, कभी भंगों में, हुडदंगों में
मदिरा में मस्त मलंगों में, सतरंगी तान तरंगों में
कभी होली में, कभी टोली में, कभी छोली में, कभी रोली में
नारों में त्यौहारों में, बस्ती की लंबी कतारों में
तालों में पातालों में, कभी नदिया में कभी नालों में
कभी गागर में कभी सागर में, मजदूर की दढी छागल में
कभी घोटों में कभी लाटों में, छातों में बरछातों में
कभी खप्पर पे कभी छप्पर पे, झुग्गी की टूटी टप्पर पे
कभी हॉथों में कभी बातों में, संवादों में विवादों में
वादों में इरादों में, कावेरी के कर्नाटक में
कभी अर्पण में, कभी तर्पण में, कभी आसों में, कहीं सांसों में
कभी कलछी में कभी कांसों में, घातक की निश्चल प्यासों में
कभी नींदों में, उम्मीदों में, कभी पत्तों पर कभी रस्तों पर
कभी पनघट पे कभी जमघट में, कभी झंझट में कभी संकट में
कहीं कमलों में कहीं गमलों में, सकोरों में कटोरों में
मिट्टी की सौंधी खुशबू में, कभी मेहनत के पसीने में
घनघोर बरसते बादल में, कभी बाढ़ों में अकालों में
तोड़ समंदर की मर्यादा, कंपित भूजल भूचालों में
"पानी कहां-कहां नहीं मिलता
पर जहां जरूरत है उसको वहां नहीं मिलता"
"इसीलिये हर बूंद का संचय करें, चलो पानी का अक्षय करें"

******

पाणिनी

नत्वाम सरस्वती देवि: शुध्याम गुण्यां करोम्यहम,
पाणिनीय प्रवेषाया: लघुसिद्धांत कौमुदीम।

के.एन.द्विवेदी
वरि. आरेखण अधिकारी

प्रस्तुत लेख हिन्दी (grammer) व्याकरण संबंधित हिन्दी भाषा के रूप को संवारने की व्याख्या करते हुये उद्धृत कर रहा हूँ।

पाणिनी एक संस्कृत के महान विद्वान हुये हैं, इस्लाम आने से पहले अफगान पश्तूनों में उनके बीच उच्च जाति ब्राहमण थे। महान संस्कृत विद्वान और व्याकरणिक पाणिनी का जन्म पश्तुन जनजाति में हुआ था। पणिनी आज भी पश्तूनों के बीच एक प्रमुख जनजाति है।

संस्कृत साहित्य वेदों के गठन के साथ अस्तित्व में आया और आने वाले समय के लिए साहित्यिक ज्ञान की एक समृद्ध विरासत छोड़ गया। हालांकि, वेदों की भाषा संस्कृत कविता और नाटक में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा से भिन्न थी। जब कविता, नृत्य और नाटक लिखने की बात आती है तो शास्त्रीय संस्कृत साहित्य प्रचलित पाया जाता है। संस्कृत में इस प्रकार का शास्त्रीय साहित्य हमारे ज्ञान और साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि संस्कृत कविता वैदिक कविता से अलग है। धर्म और साहित्य मुख्य रूप से हिंदू धर्म में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता रहा है और तथ्य यह है कि अधिकांश भारतीय भाषाओं को संस्कृत से सीधे या दृढ़ता से प्रभावित किया गया है। यूरोप में लैटिन की तरह भारतीय संस्कृति में भाषा और इसका साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। शास्त्रीय संस्कृत साहित्य कई प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों का दावा कर सकता है और उनके कार्यों का अनुवाद विदेशी भाषाओं में किया जा रहा है और पाणिनी उनमें से एक था, एक महान विचारक, जिसने शास्त्रीय संस्कृत विद्वानों की आकाशगंगा में एक जगह बनाई।

संस्कृत को भारत की शास्त्रीय भाषा माना जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप पर बोली जाने वाली अधिकांश भाषाएं संस्कृत से ली गई हैं। संस्कृत भाषा में व्याकरण को एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। इसे वैज्ञानिक अध्ययन के एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में माना जाता था। इसे एक ऐसे क्षेत्र के रूप में माना जाता था जिसमें अपने स्वयं के पैरामीटर थे और नियम स्थापित किए गए थे और पाणिनी को इस भाषा के निर्माता माना जाता है।

“अ ई उण ऋ लृ क ए ओङ्ग ऐ ओच हयवरट लण यमगणनम झभय घड़धष जबगडदश खफछठथचटतव कपय शषसर हल”

स्वर और व्यंजन की रचनाओं से संस्कृत और हिन्दी को व्याकरण से नया रूप मिला है। इस की सम्पूर्ण जानकारी लघुसिद्धांत कौमुदी में मिलती है।

पाणिनी एक संस्कृत व्याकरणिक था जिसने ध्वन्यात्मक, ध्वनिकी और रूपरेखा का एक व्यापक और वैज्ञानिक सिद्धांत दिया। संस्कृत भारतीय हिंदुओं की शास्त्रीय साहित्यिक भाषा थी और पाणिनी को भाषा और साहित्य का संस्थापक माना जाता है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि "संस्कृत" शब्द का अर्थ "पूर्ण" या "सिद्ध" है और इसे दिव्य भाषा, या देवताओं की भाषा के रूप में माना जाता था। पाणिनी के व्याकरण को भाषा में दुनिया की पहली औपचारिक प्रणाली माना जाता है। 19वीं शताब्दी में भाषा में गॉटोब फ्रीज के नवाचार से पहले इसका आविष्कार किया गया था।

पाणिनी सबसे आविष्कारक और मूल लोगों में से एक थे जिन्होंने संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के विकास में मदद की। उन्हें साहित्य और भाषा के संस्थापक माना जाता है। इसे और अधिक स्पष्ट रूप से रखने के लिए, इस प्रसिद्ध संस्कृत ग्रैमरियन ने संस्कृत ध्वन्यात्मक और रूपरेखा का वैज्ञानिक विश्लेषण दिया। देवताओं की भाषा होने के नाते, संस्कृत को पूर्ण और पूर्ण भाषा माना जाता था। पाणिनी ने शास्त्रीय संस्कृत भाषा का विश्लेषण किया जो सभी साहित्यिक कार्यों की भाषा थी और इस भाषा की ध्वनिकी पर अधिक प्रकाश डाला गया था।

पाणिनी के कार्यों में, सबसे मशहूर और प्रमुख को अष्टध्याय कहा जाता है। यह एक थीसिस है जिसमें आठ अध्याय होते हैं और प्रत्येक अध्याय को तिमाही अध्यायों में विभाजित किया जाता है। यह ग्रंथ मूल रूप से पवित्र ग्रंथों की भाषा और सामान्य जीवन में संचार के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा के बीच अंतर को हाइलाइट करता है। संस्कृत व्याकरण का वर्णन करने के लिए नियमों और परिभाषाओं का मूल सेट दिया गया था। संज्ञाओं, क्रियाओं, स्वरों, व्यंजनों जैसे लगभग 1700 बुनियादी तत्वों से शुरू करते हुए, उन्होंने उनका उपयोग समझाया और उन्हें कक्षाओं में विभाजित किया। उसके बाद वह वाक्यों के निर्माण और यौगिक संज्ञाओं और काल के उपयोग की व्याख्या करने के लिए आगे बढ़े। पाणिनी का निर्माण आज परिभाषित गणित के सिद्धांतों और कार्यों के समान है।

ओएसईएफ लिखते हैं: "पाणिनी द्वारा अपने व्याकरण के पूर्ण प्रणालीकरण के नेतृत्व में संस्कृत की वैज्ञानिक उपयोग की संभावना बहुत बढ़ी है। केवल 4000 सूत्रों (एफ़ोरिज़्म के रूप में व्यक्त नियम) के आधार पर, उन्होंने लगभग संस्कृत भाषा की पूरी संरचना बनाई, जिसका सामान्य 'आकार' अगले दो हज़ार वर्षों तक शायद ही कभी बदल गया। संस्कृत की भाषाई सुविधा को

बढ़ाने के लिए पणिनी के प्रयासों का अप्रत्यक्ष परिणाम जल्द ही वैज्ञानिक और गणितीय साहित्य के चरित्र में स्पष्ट हो गया। यह यूक्लिड की ज्यामिति के साथ संस्कृत के व्याकरण की तुलना करके लाया जा सकता है - विशेष रूप से विपरीत तुलना के बाद, जबकि गणित प्राचीन ग्रीस में दर्शन से बाहर हुआ, यह आंशिक रूप से भारत में भाषाई विकास का परिणाम था।

1876 में इन्द्रजी 'सिद्धांत ने दावा किया कि ब्रह्मी अंक अक्षरों या अक्षरों को अंकों के रूप में उपयोग करने से बाहर विकसित हुए हैं। फिर वह यह सुझाव देने गया कि 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व (अधिकांश इतिहासकारों की तुलना में पाणिनी) में पाणिनी संख्याओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए अक्षरों के अक्षरों का उपयोग करने के विचार से पहले व्यक्ति थे।

पाणिनी के निजी जीवन के बारे में कुछ भी निश्चित नहीं है। पतंजलि के महाभार्य के अनुसार, उनकी मां का नाम दक्षी था। बाद की परंपराओं के अनुसार, उनके मातृ अंकल का नाम व्याद था। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि उनके भाई का नाम पिंगला था। उनके पिता का नाम पनीना के रूप में दिया गया है, जिसमें से पैनीनी नाम प्राप्त हुआ है। भारत ने वर्ष 2004 में उनके लिए एक डाक टिकट जारी करके पाणिनी को सम्मानित किया। काशी के क्षेत्र में पाणिनी स्मारक के साथ एक मंदिर भी है। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर पाकिस्तान से लाई गई मिट्टी के साथ बनाया गया था जहां पाणिनी का जन्म हुआ था।

पाणिनी के काम का आधुनिक भाषा विज्ञान पर काफी असर पड़ा है। 19वीं शताब्दी में, ऐसा लगता है कि यूरोप को पाणिनी के काम के बारे में पता चला। यह मुख्य रूप से फ्रांज बोप था जो पाणिनी के काम में रुचि लेने लगे। बाद में अधिक भाषाविज्ञान जैसे फर्डिनेंड डी सौसुर और अन्य ने अपने काम से प्रभावित होना शुरू कर दिया। फर्डिनेंड डी सौसुर ने तीन दशकों तक पाणिनी के काम पर काम किया और अध्ययन किया और वह पाणिनी के व्याकरण से बहुत प्रभावित थे। उनके अध्ययन से साबित हुआ कि विचार के सभी पहलुओं को समझने के बाद, यह स्पष्ट था कि भारतीय विचारों और व्याकरण ने यूरोपीय भाषा संरचना को प्रभावित किया था।

कार्डोना व्यक्त करता है: "विभिन्न बिंदुओं से पणिनी के व्याकरण का मूल्यांकन किया गया है। इन सभी अलग-अलग मूल्यांकनों के बाद, मुझे लगता है कि व्याकरण की विशेषता है कि यह मानव बुद्धि के सबसे महान स्मारकों में से एक है। "

तालिबान कंधार की रानी गंधारी के महान भव्य बच्चे हैं। वह 100 कौरवों की मां है। कौरव और पांडव चचेरे भाई हैं और उन्हें द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और परशुराम जैसे महा ब्राह्मण गुरुओं द्वारा अजेय युद्ध और मार्शल आर्ट्स की कला सिखाई गई थी।

****

गुलाब गुणों की खान

'योग संदेश के सौजन्य से'

गुलाब की खूबसूरती और खुशबू हर किसी का, मनमुग्ध कर लेती है। आयुर्वेद के ग्रंथों में गुलाब के गुणों की भी चर्चा है। इसे वात-पित्त नाशक, दाह जलन, अधिक प्यास तथा कब्ज नाशक कहा गया है। इसमें विटामिन 'सी' पाया जाता है। गर्मी के मौसम में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। इसका शरबत हमारे हृदय और मस्तिष्क को बल व शीतलता प्रदान करता है। गुलाब रक्तशोधक व कांतिवर्धक गुण रखता है। गुलाब औषधीय रूप में निम्नलिखित रोगों में उपयोगी है :-

- कान में दर्द हो तो गुलाब के फूल का ताजा रस कान में टपकाना चाहिए।
- दाद पर गुलाब के अर्क में नींबू का रस मिलाकर लेप करना चाहिए।
- अधिक प्यास लगती हो तो गुलकन्द का शरबत बनाकर दिन में दो बार पीना चाहिए।
- आधासीसी सिरदर्द में, दो दाना इलायची, एक चम्मच मिश्री, 10 ग्राम गुलाब की पत्तियां पीस कर प्रातः बासी मुख खायें।
- मुंह में छाले हों तो गुलाब को उबाल कर ठंडा कर उसके पानी से कुल्ले करें।
- गुलाब का पूरा फूल कुचल कर खाने से मसूड़ों से खून या मवाद आना बंद होता है तथा मजबूती आती है।
- दो-दो चम्मच गुलकंद प्रातः तथा सायं सोते समय गुनगुने दूध के साथ लेने से कब्ज का समूल नाश हो जाता है।
- गुलाब की पत्ती, सनाव तथा छोटी हरड़ तीनों को तीन:दो:एक के अनुपान में 30 ग्राम उबालकर जब चौथाई पानी रह जाए गुनगुना करके रात को लीजिए। कब्ज के लिए यह रामबाण है।
- दिल कमजोर हो या वह अधिक धड़कता हो तो गुलाब के फूल की पत्ती के चूर्ण में बराबर मिश्री मिला लीजिए । गाय के दूध के साथ इस चूर्ण को एक-एक चम्मच की मात्रा में सेवन कीजिए।

****

जिन्दगी

निम्मी भारती
सहायक प्रबंधक (कार्मिक)

एक किनारा ये है, एक किनारा वो है।
बीच में हां बीच में बहती ही जाए।।

ज्वाला इसको जलाए, आंधी इसको भगाए,
पर जल नहीं पाए ये भीग नहीं पाए,
बस बहती ही जाए।

एक किनारा ये है, एक किनारा वो है।
बीच में हां बीच में बहती ही जाए।।

गर्मी की धूप में ठण्डी होना चाहे,
सर्दी की ठण्ड में गर्म होना चाहे,
पर हो नहीं पाए, बस बहती ही जाए।

एक किनारा ये है, एक किनारा वो है।
बीच में हां बीच में बहती ही जाए।।

एक किनारा : जिन्दगी
एक और किनारा : मृत्यु

''दोनों हमेशा साथ-साथ चलते हैं, पर
कभी भी नहीं मिलते।''

*****

वाप्कोस द्वारा स्वर्ण जयंती समारोह के पूर्व समारोह पर "स्वच्छ, स्वस्थ, समृद्ध" - "हमारी नदियां, हमारा भविष्य" और "वृक्ष लगाएं - जीवन बचाएं" का आयोजन दिनांक 24 जून 2019

वाप्कोस लिमिटेड, जल शक्ति मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार के उपक्रम ने अपना स्वर्ण जयंती समारोह दिनांक 26 जून 2019 को मनाया।

इस ऐतिहासिक अवसर के आरम्भ में, वाप्कोस द्वारा छठ घाट, नई दिल्ली में दिनांक 24 जून 2019 को प्रात: 6.15 बजे "स्वच्छ, स्वस्थ, समृद्ध" - "हमारी नदियां, हमारा भविष्य" और "वृक्ष लगाएं जीवन बचाएं" पर पूर्व समारोह का आयोजन किया गया। यमुना नदी के छठ घाट सहित अन्य घाटों - श्याम घाट, कुदसिया घाट और यमनेश्वर घाट की भी एक साथ सफाई की गई।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय केन्द्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री रतन लाल कटारिया, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय और सामाजिक न्याय व अधिकारिकता मंत्रालय, श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार समारोह के सम्मानित अतिथि थे। श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि जल उपलब्धता के मामले में भारत दुनिया के सबसे संवेदनशील देशों में से एक है और बढ़ती जनसंख्या ने समस्या को और भी गंभीर बना दिया है। जल की प्रत्येक बूंद को बचाना व संरक्षित करना चाहिए तथा हम सभी को पानी के उचित उपयोग के लिए सम्मिलित प्रयास करने चाहिए।

आगे उन्होंने कहा कि भारत ने खाद्यान्न निर्यात करने वाले देश की उपलब्धि हासिल की है। पहले हमारे देश में खाद्यान्न की कमी थी। निकट भविष्य में पानी की कमी से स्थिति खराब हो सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि पानी के पारम्परिक स्रोतों का पुनरुद्धार किया जाए और जल संरक्षण के लिए सशक्त प्रयास किए जाएं।

वाप्कोस की सराहना करते हुए श्री शेखावत ने कहा कि संगठन ने विकास कार्यों के लिए नवीन तरीके अपनाए हैं तथा चुनौतीपूर्ण सामाजिक समस्याओं के निदान के लिए भी योगदान दिया है। वाप्कोस का उद्देश्य है - विचारों के कार्यान्वयन के लिए रोडमैप तैयार करना और फिर इसे लागू करना।

जल शक्ति राज्य मंत्री श्री रतन लाल कटारिया ने कहा कि 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत हुई थी। यह कार्यक्रम अब जनांदोलन का रूप ले चुका है। घरों को पाईप द्वारा जल आपूर्ति का कार्यक्रम भी सफल होगा, क्योंकि प्रधानमंत्री इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

सचिव, जल शक्ति मंत्रालय ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि वाप्कोस तकनीकी परामर्श देने वाला और ईपीसी संगठन है। विश्व स्तर पर जल, विद्युत और अवस्थापना क्षेत्रों में संगठन की मजबूत उपस्थिति है। वाप्कोस ने एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व दक्षिण अमेरिका और प्रशांत सागर द्वीपों में परामर्श से संबंधित कार्यों को पूरा किया है। संगठन वर्तमान में 47 देशों में कार्यरत है। आशा है कि वाप्कोस आगे भी इसी प्रकार से ऊचांई की ओर बढ़ता रहेगा।

इसके बाद केन्द्रीय मंत्रियों और सचिव, श्री यू.पी. सिंह के साथ वाप्कोस के कर्मचारियों, एनजीओ के सदस्यों, आम लोगों ने यमुना नदी के छठ घाट, श्याम घाट, कुदसिया घाट और यमनेश्वर घाट पर स्वच्छता अभियान चलाया और पौधारोपण किया। वाप्कोस का उद्देश्य वाक्य है- "हमारी नदी, हमारा भविष्य" और "वृक्ष लगाएं, जीवन बचाएं"

सुन्दर भविष्य की ओर बढ़ते हाथ

Live telecast के द्वारा इन सभी घाटों पर चल रहे प्रत्येक कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी किया गया।

****

मेरी किस्मत की मीठी लकीर

कुमारी विशाखा घई
सुपुत्री श्रीमती आशा घई
जन सम्पर्क अधिकारी

आजा फिर से एक बार बैठकर चाय पीयेंगे,
जिन्दगी के सुख-दुख को फिर से जीयेंगे।

तमन्ना है मेरी तुझे एक बार फिर देख लूं,
जिन्दगी जीना फिर सीख लूं।

एक बार तो आजा सारी बातें मान लूं,
फिर से अच्छे से दुनिया जान लूं।

हर तरफ दिखती है तू,
यह सच नहीं मैं कैसे मानू।

क्यों मेरे सपनों में आकर सताती है,
तेरी यादें मुझे कभी हंसाती तो कभी रुलाती हैं।

मुस्कुराते तो हैं पर आंखों में है नमी,
बस खलती जो है तेरी कमी।

ए खुदा ! तू तो है दिल का बड़ा अमीर,
भीख में ही दे-दे मुझे मेरी किस्मत की मीठी लकीर।

******

जब आप ऊंचाईयों की सीढ़ियां चढ़ रहे हों तो, पीछे छूटे लोगों से बहुत अच्छा व्यवहार करें, क्योंकि उतरते समय यह सभी रास्ते में फिर मिलेंगे।

B+

विमल किशोर
प्रारूपकार (जल संसाधन विकास)

यदि हम कुछ खो देते हैं, तो यह अपने आप में नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करता है। इसके विपरीत, अगर हमें जीवन में कोई प्रगति या खुशी मिलती है तो वह हमें सकारात्मक ऊर्जा से भर देती है। अगर हमें कुछ वित्तीय नुकसान हूआ हैं या व्यक्तिगत या कार्यकारी जीवन में कुछ असभ्य प्रतिक्रिया हुई है, तो वो हमारे जीवन से कुछ सकारात्मक ऊर्जा को चुरा सकता है। सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा का सीधा संबंध स्वयं के आत्मविश्वास से है। हम सभी को जीवन के विभिन्न मोर्चों पर सफल होने के लिए विश्वास प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, कुछ दीर्घकालिक कारकों का, जो कि हमारी दैनिकचर्या से संबंधित है, विश्लेषण किया जाना चाहिए। यहाँ मैं हमारे जीवन में सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने वाले कुछ धीमी गति के प्रेरकों पर विचार करना चाहूँगा।

हमारे बचपन की लुका-छिपी और तेज हवा के ताजा झोकों (युवावस्था) के बाद, एक समय ऐसा आता है जब धीरे-धीरे हमारे जीवन में सभी चीजें बदल रही होती हैं। बहुत सी बातें पानी में कुछ ठोस कणों की तरह बैठ रही होती हैं। कुछ स्ट्रीट गेम्स खेलने के बाद और कुछ गैर-जिम्मेदाराना रवैये से आगे, हम धीरे-धीरे जीवन के एक ऐसे चरण में प्रवेश करते जाते हैं, जहाँ हम अपनी खिलखिलाती हँसी को कुछ गंभीर मुस्कान के साथ बदल देते हैं और हमारे जीवन के लिए कुछ लक्ष्यों को निर्धारित करने के साथ हमारा भोलापन भी परिपक्वता में बदलता जाता है। युवा उम्र हमें स्वतंत्रता, कुछ परिपक्वता और जिम्मेदारियां देती है। इनके अलावा, युवावस्था सपने, जिज्ञासा और दृष्टिकोण भी साथ लाती है। युवावस्था की हमारी नई शक्तियों का आनंद लेने के बाद, हमें समय के साथ-साथ एक ऐसे मोड़ पर आगे बढ़ा दिया जाता है जहां चीजें आसान और व्यवस्थित लगती हैं। लेकिन धीरे-धीरे और जटिल होती जाती है, और अधिक जटिल होती जाती हैं और इसी तरह। वह सब संभवतः नौकरी, व्यवसाय और विवाह के उपरांत हमारे जीवन में स्थायित्व पाने के साथ शुरू होता है।

जीवन में स्थायित्व पाने के बाद अक्सर हमारे जीवन का समय-अवधि एक संकीर्ण मार्ग बनता जाता है। हम अक्सर अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों को नजरअंदाज कर देते हैं या कभी-कभी भूल जाते हैं। जैसे हम आमतौर पर अपनी योजना के अनुसार समय पर जाग नहीं पाते हैं। तदनुसार, सुबह के समय हेतु निर्धारित किए हूये कसरत, योगा या अन्य ऐसी ही किसी गतिविधि को हम लटकाते जाते हैं, या इसकी व्यर्थता की धारणा पर रद्द कर देते हैं। हम अपने कार्यालय की जिम्मेदारियों के लिए अपना समय और ऊर्जा बचाने की कोशिश करते हैं।

जिम्मेदारियां जो हम अपने वरिष्ठों से सीखते हैं, व्यक्तिगत जीवन से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं। और हम एक सामान्य कथन विकसित करते हैं कि **'मेरे पास समय नहीं है'**। मैं अपने दोस्त से मिलना चाहता/चाहती हूं लेकिन उसके लिए समय नहीं है। मैं वर्क आउट करके फिट दिखना चाहता/चाहती हूं लेकिन समय नहीं है। मैं सप्ताहांत पर एक दिलचस्प जगह पर जाना चाहता/चाहती हूं, लेकिन समय नहीं है। मैं बहुत व्यस्त हूं और बिलकुल समय नहीं है। हम नई चुनौतियों का अनुभव करते हैं और नई जन्म ली हुई समस्याओं को हल करने में व्यस्त हो जाते हैं।

हमने अपने जीवन में लगभग सभी लक्ष्य जीतने का सपना देखा होता है। एक सफल और प्रभावशाली इंसान बनने का सपना देखा होता है। हम अपने आने वाले कार्य-जीवन या वैवाहिक जीवन के बारे में भी उत्साह महसूस करते हैं। लेकिन जब हम उस क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो समय की कमी, संसाधनों की कमी के कारण या फिर हमारे आत्म-व्यस्त निर्मित सीमाओं के कारण चीजें थोड़ी मुश्किल हो जाती हैं। एक सफल भविष्य के सपने देखना एक सैद्धांतिक बात है और इसे पाना व बनाए रखना व्यावहारिक रूप से *'केक वॉक'* नहीं है। इसके लिए समझौता, बहुत मेहनत और निरंतर एकाग्रता की आवश्यकता होती है। हमारी योजनाओं को पूरा करने के लिए, हम अक्सर अपने व्यक्तिगत हितों के साथ समझौता करते हैं। हम आवश्यक प्रोफ़ाइल के अनुसार अपने आप को ढालने की कोशिश करते हैं। निश्चित रूप से वह सब हमें आवश्यक दिशा में बदलता भी है लेकिन हमारी कुछ सकारात्मक ऊर्जा को नकारात्मक ऊर्जा के साथ बदल देता है।

हम अपने स्वभाव में, जीवन के लिए हमारी नीतियों में, हमारे रिश्तों में और अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या में भी बदलाव पाते हैं। हमारा व्यक्तित्व, हमारी मित्र-शाखा और यहां तक कि हमारी सोच को कुछ नए आयाम, कुछ नए आकार मिलते हैं। *समय एक शिल्पकार की तरह है,* जो हमारे जीवन के अलग-अलग दौर में नए-नए पाठ पढ़ाता है। यह साबित करने की आवश्यकता नहीं है कि समय कितना शक्तिशाली है। यह हमें हमारी स्थितियों की परवाह किए बिना या बिना किसी पूर्व सूचना के लगातार नए पाठ पढ़ाने का क्रम जारी रखता है। हमारे कामकाजी जीवन और हमारे वैवाहिक जीवन में, हमारे द्वारा किए गए समझौते हमारी व्यक्तिगत इच्छा, हमारे भीतर की आवाज़ को चुरा लेते हैं, जिसे हम समय गुज़र जाने के बाद महसूस करते हैं। यह प्रक्रिया हमसे कुछ सकारात्मक ऊर्जा खो देती है और नकारात्मक भाव को जन्म देती है। उन गतिविधियों में व्यस्त रहना जो वास्तव में हमारे अन्तर्मन द्वारा इच्छित नहीं है, हमें एक अलग प्रकार का उदासीन रवैया देती है जो आगे जाकर एक नकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है।

हमारे जीवन में अधिकतर घटनाएँ हमारे अतीत की गतिविधियों का परिणाम होती हैं, जो हम करते आये हैं। कार्यालय में हमारी कार्य के प्रति सोच क्या है और हम अपने काम का आनंद

कैसे ले रहे हैं, यह ऊर्जा अर्जित करने का एक बड़ा कारक है। इसी तरह हम अपने निजी जीवन का कैसे आनंद ले रहे हैं, वह भी ऊर्जा प्राप्त करने का एक प्रमुख कारक है। हमारे जीवन में स्थायित्व के बाद यह पूरी तरह से हमारे ऊपर है कि हम अपने दैनिक जीवन के लिए नियमित अनुक्रम कैसे निर्धारित करें। *जीवन वह है जो हम इसे बनाते हैं*। आप अक्सर अपने जीवन के सीमित कारकों को दोष देते हैं। लेकिन यह भी अपने आप पर निर्भर करता है कि इन पर जीत कैसे पानी है या उन्हें उत्पन्न ही नहीं होने देना है। काम पर जाने से पहले, हमारी जीवनशैली तय करती है कि हम किस प्रकार की ऊर्जा अपने अंदर समाहित कर रहे हैं। नकारात्मक ऊर्जा को दूर करना और हमारे दैनिक जीवन में सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करना बहुत आसान काम नहीं है। यह एक सतत प्रक्रिया है। यह एक निरंतर अभ्यास की तरह है। हमारे दैनिक जीवन में हमारे द्वारा की जाने वाली सभी गतिविधियाँ हमारी सोच की प्रक्रिया पर निर्भर करती हैं। *इसलिए अपनी सोच को व्यवस्थित करना ज़रूरी है।* अपनी दिनचर्या को सकारात्मक बनाना इसकी चाबी है।

सारा मंत्र इस अवधारणा में निहित हैं कि हम अपने जीवन का आनंद ले रहे हैं या केवल समझौता कर रहे हैं। समझौता एक आलसी भाव का शब्द है। जब भी हम समझोते के बारे में सोचते हैं, समझौता करते हैं या इसके बारे में बात करतें हैं तो यह हमें एक आलसी एहसास देता है। एक लंबी सांस। *आलस्य भी नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है*। हम अपने जीवन का आनंद तब लेते हैं, जब हम अपनी पसंद का कार्य कर रहे होते हैं। सभी में कुछ विशेष अभिरुचि होती है। हर कोई इतना भाग्यशाली भी नहीं है कि वह उस कार्यक्षेत्र को प्राप्त करने में सक्षम हो जो उसकी रुचि का क्षेत्र है। *लेकिन 'समझौता' की भावना को दूर करना और इसे 'आनंद' की भावना से बदलना, रचनात्मक हो सकता है*। अपनी रुचि से अलग कार्यों में भी। अपने आप में विश्वास करना और अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के लिए दिलचस्प तरीके अपनाना सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने का मंत्र है और ऐसा हम अपनी रुचि से अलग कार्यों में भी कर सकते हैं। जरा विश्लेषण कीजिये।

अपने आप से पूछें कि आप जीवन से क्या चाहते हैं? और उन विचारों को अपने जीवन में डालें। यह एक कला है जिसे आपके दैनिक कार्यों में लागू करने की आवश्यकता है। अपने उपक्रमों में आनंद को पाना अपने आप को अपने उपक्रमों में पाना है। आत्मविश्वास प्राप्त करना और सकारात्मक रूप से सोचना सैद्धांतिक बात है जिसे व्यावहारिक रूप से लागू करने की आवश्यकता है। सकारात्मक दृष्टिकोण एक प्रतिभाशाली गुण है। इसे किसी भी कीमत पर अपने आप में विकसित करने की आवश्यकता है।

"B+ in crowd and B+ in the life."

******

गुरु या किताब से ज्यादा सिखाती है जिंदगी

साभार नवभारत टाइम्स

जोहन वैल्फगन वन गोथे जर्मनी के महान लेखक और विचारक थे। 18 अगस्त 1749 को जन्मे गोथे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह साहित्य के अलावा कला,विज्ञान और धर्म के भी अच्छे जानकार थे। वह जितने अच्छे लेखक थे, उतने ही बेहतरीन वैज्ञानिक और पेंटर भी। गोथे ने बतौर सरकारी अधिकारी भी काम किया। उन्होंने कालिदास की रचना अभिज्ञान शाकुंतलम का जर्मन में अनुवाद किया। वैश्विक साहित्य का विचार उनके ही दिमाग की उपज था, जो फ्रांस, इटली, इंग्लैंड, ग्रीस और अरब देशों में काफी सराहा गया। गोथे के काम को पूरे यूरोप में काफी प्रसिद्धि मिली। 22 मार्च 1842 को उनका देहांत हो गया ।

- ❖ किसी भी बड़े मकसद तक पहुंचने के लिए दो रास्ते होते हैं - एक जोश का और दूसरा दृढ़ता या धुन का। पहला रास्ता बहुत सारे लोग चुनते हैं, जबकि दूसरा रास्ता बहुत कम क्योंकि यह मुश्किल है और इस पर लगातार चलना पड़ता है। लेकिन इसमें फेल होने की आशंका लगभग नहीं होती।
- ❖ जिसके घर में शांति होती है, वही खुश होता है, फिर चाहे राजा हो या रंक।
- ❖ वही खुश है, जो दूसरों के गुणों की कद्र करता है और अपनी चाहत व काबिलियत के बीच फर्क कर सकता है।
- ❖ जिन लोगों में अपनी सीमा को पहचानने की क्षमता होती है, वे निपुणता के करीब आ जाते हैं।
- ❖ जैसे ही खुद पर भरोसा करने लगते हैं, आप जीना सीख जाते हैं।
- ❖ कुछ लोग अपनी दौलत की तब तक कद्र नहीं करते, जब तक वह खत्म होने के कगार पर न पहुंच जाए। कुछ ऐसा ही वे वक्त के साथ भी करते हैं।
- ❖ सिर्फ जानना काफी नहीं है, उसे अमल में लाना भी जरूरी है। सिर्फ इच्छा होना काफी नहीं है, उसे करना जरूरी है।
- ❖ हिम्मती विचार शतरंज के उन मोहरों की तरह होते हैं, जो आगे बढ़ने पर शिकस्त खा सकते हैं लेकिन जीत की नींव भी रख सकते हैं।

- तकदीर हमारी इच्छाएं पूरी करती है लेकिन अपने अंदाज में, ताकि हमें हमारी चाहतों से ज्यादा दे सके।
- भावनाओं के बारे में बहुत ज्यादा मत सोचो। बेहद भावुक दिल दुख की वजह बन जाता है।
- जब तक हम जवान हैं, तब तक गलतियां मंजूर हैं लेकिन किसी को भी जिंदगी खत्म होने तक उन्हें नहीं खींचना चाहिए।
- खुशी एक गेंद की तरह है, जो जहां भी जाती हैं हम उसके पीछे भागते हैं लेकिन जब वह रुक जाती है तो हम उसे लात मारते हैं।
- जिंदगी पर भरोसा करो, यह किसी भी गुरु या किताब से ज्यादा सिखा सकती है।
- आप किसी दिमाग को पढ़ना चाहते हैं तो उसके शब्दों पर गौर करें।
- विचारों की दुनिया में सब कुछ जोश पर निर्भर करता है, जबकि असली दुनिया में सब कुछ धीरज पर निर्भर करता है।

चिंतन

विचारों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अपने सुख-दुःख, हानि- लाभ, उन्नति-अवनति, सफलता-असफलता सभी कुछ हमारे अपने विचारों पर निर्भर करते हैं। जैसे विचार होते हैं, वैसे ही हमारा जीवन बनता है। संसार कल्पवृक्ष है, इसकी छाया तले बैठकर हम जो विचार करेंगे वैसे ही परिणाम प्राप्त होंगे । जो अपने आपको सदविचारों से भरे रहते हैं, वे जीवन के महान वरदानों से विभूषित होते हैं। सफलता, महानता, सुख-शान्ति, प्रसन्नता के परितोष उन्हें मिलते रहते हैं।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

50वें स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर सिरी फोर्ट आडिटोरियम में "Transcending Boundaries - Touching Lives" कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक : 26 जून 2019

वाप्कोस लिमिटेड ने दिनांक 26 जून 2019 को भव्य रूप से अपना स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया। इस ऐतिहासिक स्मरणोत्सव में कम्पनी ने 'ट्रांससेंडिंग बाउंड्रिज-टचिंग लाइव्स' विषय पर स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन सिरी फोर्ट सभागार, नई दिल्ली में किया।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय केन्द्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री रतन लाल कटारिया, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय और सामाजिक न्याय व अधिकारिकता मंत्रालय, श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार समारोह के सम्मानित अतिथि थे। समारोह के दौरान विभिन्न देशों से गणमान्य अतिथि भी उपस्थित थे।

सीएमडी, वाप्कोस श्री आर.के.गुप्ता माननीय केन्द्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय केन्द्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय ने कहा कि वाप्कोस एक बहुत ही महत्वपूर्ण संगठन है जो न केवल विकासात्मक गतिविधियां कर रहा है बल्कि सामाजिक मुद्दों की चुनौतियों के लिए बड़े कदम भी उठा रहा है। आगे उन्होंने कहा कि वाप्कोस का उद्देश्य परियोजनाओं की संकल्पना से लेकर समापन तक सारा कार्य करना है।

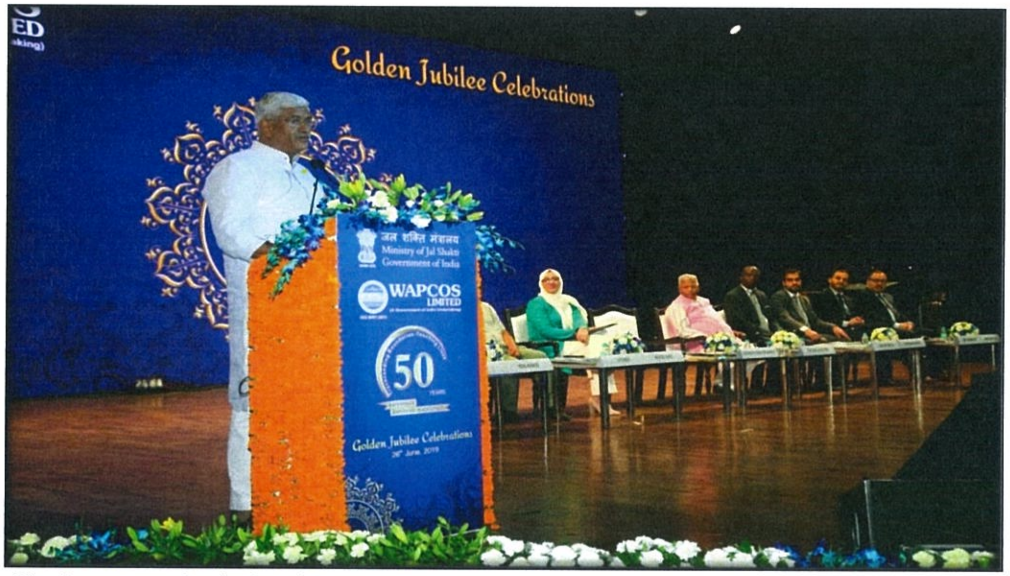

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय केन्द्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार वाप्कोस की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 'ट्रांससेंडिंग बाउंड्रिज-टचिंग लाइव्स' विषय पर आयोजित समारोह में श्री रतन लाल कटारिया, माननीय राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय और सामाजिक न्याय व अधिकारिकता मंत्रालय, श्री यू.पी.सिंह, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय तथा कई देशों के गणमान्य अतिथि और श्री आर.के.गुप्ता, सीएमडी, वाप्कोस की उपस्थिति में सभा को संबोधित करते हुए ।

26 देशों से उपस्थित माननीय मंत्रियों, राजदूतों और प्रतिनिधिमण्डल के प्रतिनिधियों द्वारा इन देशों में परियोजनाओं के विकास और लोगों के जीवन में खुशियां लाने के लिए वाप्कोस द्वारा दिए गए योगदान के लिए श्री शेखावत को सराहनीय प्रमाण पत्र भेंट किए गए। विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों ने अपने देशों में सामाजिक-आर्थिक भागीदारी के लिए वाप्कोस के माध्यम से भारत सरकार का आभार व्यक्त किया। वाप्कोस पर काफी टेबल बुक और वैप्टेक-तकनीकी जरनल का विमोचन भी गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया था।

26 देशों से उपस्थित माननीय मंत्रियों, राजदूतों और प्रतिनिधिमण्डल के प्रतिनिधियों द्वारा इन देशों में परियोजनाओं के विकास और लोगों के जीवन में खुशियां लाने के लिए वाप्कोस द्वारा दिए गए योगदान के लिए श्री शेखावत को सराहनीय प्रमाण पत्र भेंट किए।

वाप्कोस पर काफी टेबल बुक और वैप्टेक-तकनीकी जरनल का विमोचन भी
गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सीएमडी, वाप्कोस, श्री आर.के.गुप्ता ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वाप्कोस जल, विद्युत व अवस्थापना क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति वाला एक प्रौद्योगिकी चालित परामर्शी एवं इंजीनियरिंग, प्रापण और निर्माण (ईपीसी) संगठन है। वाप्कोस ने एशिया, अफ्रीका, मध्य-पूर्व, दक्षिण अमेरिका और प्रशांत महासागर द्वीप को शामिल करते हुए देशों में परामर्शी कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया और वर्तमान में 47 से अधिक देशों में प्रचालन कर रहा है।

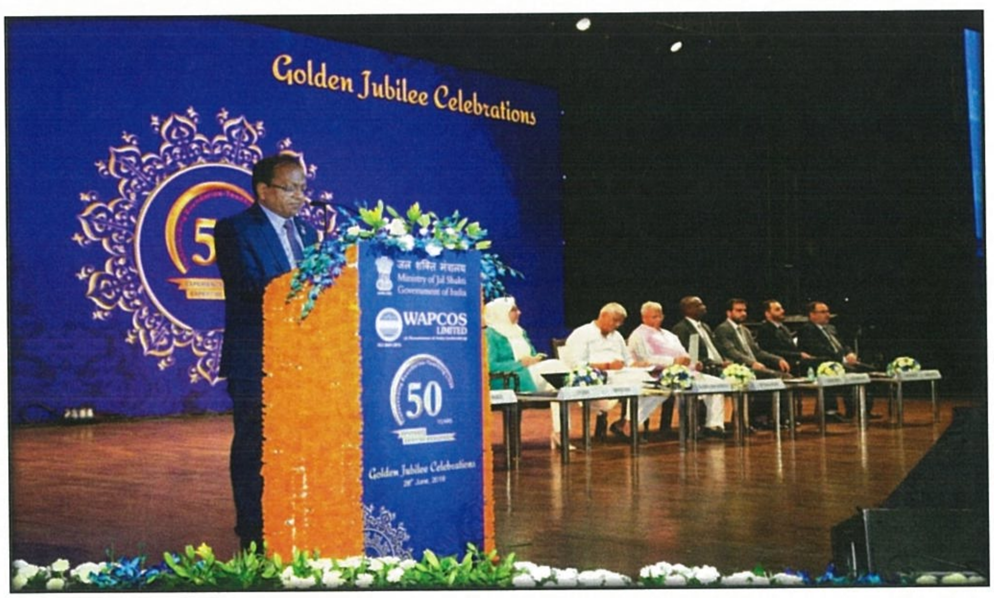

सीएमडी, वाप्कोस, श्री आर.के.गुप्ता सभा को सम्बोधित करते हुए

इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित सुश्री नाहिदा फरीद (Ms. Nahida Farid), संसद सदस्या, अफगानिस्तान ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वाप्कोस का काम Touching lives नहीं Touching Hearts है। अफगानिस्तान की सूखी धरती पर वाप्कोस ने आशा के मोती बिखेरे हैं। भारत-अफगान मैत्री बांध (सलमा बांध) बन जाने से हजारों हेक्टेयर भूमि पर कृषि हो रही है। लाखों घरों में बिजली आ गई है और यह सब वाप्कोस के कारण ही सम्भव हो पाया है। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान की जनता चाहती है कि उनकी सभी परियोजनाएं वाप्कोस द्वारा ही की जाएं।

सुश्री नाहिदा फरीद (Ms. Nahida Farid), संसद सदस्या, अफगानिस्तान इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए

अब बारी थी श्री सोनू निगम की जिन्हें किसी भी परिचय की आवश्यकता नहीं है। श्री सोनू निगम ने जैसे ही अपने सुरों का जलवा बिखेरना प्रारंभ किया तो यह सिलसिला ऐसा चला कि सभी दर्शक संगीतमय हो कर झूम उठे।

अंत में श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वाणिज्य व मानव संसाधन विकास) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ वाप्कोस के 50वें स्थापना दिवस समारोह का समापन हुआ।

दोनों कार्यक्रमों के लिए वाप्कोस कार्मिकों ने भी हृदय से वाप्कोस प्रबंधन का धन्यवाद किया।

****

बच्चों में लीडरशीप

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

हर बच्चा एक कच्ची मिट्टी के जैसे होता है जिसको सुदंर सा आकार कुम्हार अर्थात् माता-पिता, शिक्षक और समाज मिल कर देते हैं। यदि कोई चूक हो जाए तो आकार को बिगड़ते देर नहीं लगती है। बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण की सर्वप्रथम पाठशाला परिवार होता है और उसमें मां की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। बच्चे के जन्म के समय उसका कोई नाम, जाति व धर्म नहीं होता, लेकिन जिस परिवार/समाज में वह जन्म लेता है, उसका विकास उसी परिवार और समाज की मान्यताओं के अनुरूप होता है।

बच्चों का संपूर्ण विकास तभी संभव है, जब टीम भावना से काम करने का गुण उनमें हो। टीम के बिना लीडरशीप संभव नहीं होती। बच्चों का साथ साथ खेलना, उनकी क्लास, पिकनिक और दोस्तों से मिलना – जुलना इसी टीम-भावना का परिणाम है। यदि टीम – भावना का विकास हो तो बच्चे बड़े होकर काबिल बनते हैं। अकेले काम करने की आदत बच्चों के विकास में रूकावट डालती है। इसलिए जरूरी है कि बच्चे हर काम मिल-जुलकर करें।

आज के अति एक्सपोजर की दुनिया में बच्चे उसी को रोल मॉडल समझने लगते है, जो उन्हें बार-बार दिखता है। ऐसे में बच्चे पॉजिटिव और नेगेटिव दोनों प्रकार के रोल मॉडल्स से प्रभावित होते हैं। तब बड़ों की जिम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों को सही-गलत का चुनाव करना सिखाएं, उन्हें गाइड करें। आखिर हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा सफल नागरिक बने और जीवन में सफलता प्राप्त करें।

एक सफल लीडर के लिए सबसे जरूरी गुण है - सबको साथ लेकर चलने की क्षमता। इस गुण का विकास करने के लिए बच्चों में लीडरशिप स्किल डेवलप करना काफी जरूरी होता है। स्कूलों में अक्सर देखा जाता है कि जिस बच्चे के अंदर लीडरशिप क्वालिटी होती है, वे दूसरों से पहले अपना काम कर लेता है। विकसित नेतृत्व क्षमता वाला बच्चा दूसरे बच्चों के मुकाबले अपना प्रोजेक्ट पहले पूरा कर लेता है। स्कूल में होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता, खेल-कूद और अन्य प्रतियोगिताओं में वो अव्वल रहता है।

नेतृत्व कौशल बच्चे के जरिए बच्चों में आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। इस गुण के कारण बच्चे को लक्ष्य प्राप्त करने में मुश्किल नहीं होती। सभी अभिभावकों को चाहिए कि वो अपने बच्चों के अंदर नेतृत्व क्षमता का विकास करें। नेतृत्व कौशल से बच्चा अपने काम के प्रति जिम्मेदार बनता है। अभिभावकों द्वारा बच्चे को लीडरशिप स्किल्स सिखाने

का मतलब ये नहीं कि उस पर प्रेशर डाला जा रहा है, बल्कि इसके जरिए बच्चा जिम्मेदार बनता है।

एक अच्छा लीडर कभी भी खुद को लीडर घोषित नहीं करता। उसकी खूबियों को पहचानकर उसके साथी उसे अपने लीडर के रूप में चुनते हैं। अभिभावकों को अपने बच्चों को नेतृत्व करना सिखाने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों के बारे में भी बताया जाना चाहिए।

अगर माता पिता ऐसा करते हैं तो बच्चा लीडर बनने के कौशल के साथ ही एक मजबूत व्यक्ति बनकर उभरेगा। किशोरावस्था के दौरान ही बच्चों में नेतृत्व की क्षमता विकसित की जा सकती है, क्योंकि इस उम्र में उनका दिमाग जिज्ञासु और कुछ कर दिखाने की स्फूर्ति से भरा होता है।

अभिभावकों को अपने बच्चे को सिखाना चाहिए कि वो कैसे लोगों से प्रभावशाली ढंग से बातें करें, किस तरह से जटिल परिस्थितियों में निपटे, कैसे अग्रिम योजना बनाई जाए और किसी चीज के लिए कैसे रणनीति बनानी चाहिए।

बच्चों को सच्ची घटनाओं के उदाहरण देकर बताएं कि कैसे अनुशासन से अपने लक्ष्य की तरफ बढ़कर सफलता पाई जा सकती है।

******

संसार के सत्य

'मेरी नजर में'

सर्वोत्तम दिन	-	आज
सबसे उपयुक्त समय	-	अभी
सबसे बड़ा पाप	-	भय
सबसे बुरी भावना	-	ईर्ष्या
सबसे बड़ा शत्रु	-	क्रोध
सबसे बड़ी भूल	-	समय बर्बाद करना
सबसे विश्वसनीय मित्र	-	आपका अपना हाथ
सबसे आसान काम	-	दूसरे में त्रुटि निकालना
सब धर्मो का निचोड़	-	सच्चाई, ईमानदारी एवं विनम्रता
आपके लिए सर्वोत्तम भाषा	-	आपकी अपनी राजभाषा हिन्दी

*****

जय चंदीराम

भारत की प्रथम टी.वी. प्रोड्यूसर

साभार : भारत की प्रथम महिलाएं
लेखिका आशारानी व्होरा

टेलीविजन या दूरदर्शन कार्यक्रम तब भारत में नया था। केवल दिल्ली और बंबई तक सीमित था, इसलिए तब तक कुछ थोडी सी महिलाएं ही इस क्षेत्र में आ पाई थीं। शीघ्र ही नए केंद्र खोलकर योजना को विस्तार दिया जाना था। विस्तार योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित व्यक्तियों की उपलब्धि के लिए पूना के फिल्म प्रशिक्षण संस्थान में दूरदर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने की व्यवस्था की जा रही थी, जिससे अनेक महिलाओं को इसमें अपनी कला और प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता। पर विदेश में प्रशिक्षण पाकर भारत में दूरदर्शन की स्थापना के साथ ही जिसने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में पदार्पण किया और भारत के विविध क्षेत्रों की अग्रणी महिलाओं के साथ जिसे स्मरण किया जाता रहेगा, वह नाम है जय चंदीराम।

कुमारी जय चंदीराम से यह पूछने पर कि जब भारत में टेलीविजन था ही नहीं, इसमें प्रशिक्षण पाने की प्रेरणा या सूझ आपको कहां से मिली? उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, ''अदृश्य से। और फिर भाग्य मुझे यहां ले आया।'' अदृश्य और नियति की बात पर आश्चर्य होना स्वाभाविक था। कुमारी जय चंदीराम ने बात का खुलासा किया, ''लेडी इरविन कॉलेज, नई दिल्ली से अध्यापन प्रशिक्षण में डिप्लोमा लेने के बाद बाल मनोविज्ञान में आगे अध्ययन के लिए अमेरिका गई थी। पर वहां जाकर विचार बदल गया। मेरा थिएटर का शौक देख डीन ने सुझाया थिएटर, रेडियो, टेलीविजन विषय ले लो तो तुम्हारी रूचि का विस्तार होगा और भारत लौटने पर तुम्हें काम का अवसर भी शीघ्र मिल जाएगा। शीघ्र ही वहां टेलीविजन जाने वाला है। थोडा सोचने के बाद, बात मुझे भी जंच गई और भाग्य ने मुझे उस दिशा की ओर प्रेरित कर दिया, जो इसके पूर्व मैंने कभी सोचा ही न था। है न अदृश्य की प्रेरणा और भाग्य का संबल!" मानना पडा। अदृश्य की प्रेरणा तो सबसे बडी प्रेरणा है और बहुतों के साथ जब ऐसा होता है तो वे सफल भी खूब होते हैं। कुमारी जय चंदीराम की सफलता इसका सुबूत दे रही थी।

उन्होंने बताया कि ब्रियारक्लिफ कॉलेज 'एसोसिएटशिप ऑफ आर्टस्' लेने के बाद जब उन्होंने फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी से बी.ए. किया तो थिएटर व रेडियो विषयों में टेलीविजन भी एक विषय था। बी.ए. करने के बाद वे भारत लौट आई थी। उसी वर्ष 1961 में दूरदर्शन की स्थापना हुई। उन्हें काम मिल गया। शुरू में शैक्षणिक कार्यक्रम में लगाया गया, फिर बारी-बारी से दूसरे विभागों में भी और उनका व्यावहारिक प्रशिक्षण होता गया। पर नियमित कार्य और अच्छा पद पाने के लिए

अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। छात्रवृत्ति पाकर जय चंदीराम सन् 1965 में फिर विदेश गईं। इस बार 'स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड कम्यूनिकेशन' में प्रवेश लेकर दूरदर्शन विषय में एम.ए. किया। इस पाठ्यक्रम में दूरदर्शन के कला पक्ष, तकनीकी पक्ष, व्यवस्था पक्ष, नीति-निर्धारण, प्रशासन आदि सभी में सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था है। कुमारी जय चंदीराम का शोध विषय था - 'एजुकेशनल टेलीविजन इन इंडिया।'

भारत लौटकर वे फिर दूरदर्शन कार्यक्रम से संबद्ध हो गईं। प्राय: सभी विभागों में कार्य का अनुभव ले चुकी थीं। जनवरी 1970 से बाल कार्यक्रम विभाग में प्रोड्यूसर के पद पर कार्य कर रही थीं। सन् 1972-73 में दूरदर्शन केंद्र में प्रशिक्षण कार्य भी संभाल रही थीं।

नए क्षेत्र में प्रवेश करने पर स्त्रियों को प्राय: जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, प्रगतिशील परिवार की और विदेश में शिक्षित लड़की होने के नाते जय चंदीराम को वैसा कोई कठिन अनुभव नहीं हुआ। न ही यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें अतिरिक्त साहस की अपेक्षा हो। फिर भी, पुरूष-बहुल कार्य-बहुल इस कार्यक्षेत्र में वह स्वयं को बहुत सहज नहीं पाती थीं। मम्मी को अकसर शिकायत होती है कि इस लाइन में काम ज्यादा है। दफ्तरों के निर्धारित कार्य-घंटों से अधिक कार्य उन्हें पसंद नहीं। मैं भी कभी-कभी थक-सी जाती हूं, पर ऊब इसमें नहीं है। कार्य का संतोष ही अधिक कार्य का पुरस्कार है और कुछ करके दिखाने की लगन ही उसकी प्रेरणा। फिर यह तो कला क्षेत्र है। इसमें कार्य को निश्चित घंटो की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। भारत में यह कार्यक्षेत्र अभी नया भी है। प्रारंभ की योजनाओं, प्रयोगों, उनके प्रभावों-परिणामों के विश्लेषण और मूल्यांकन में ही विस्तार की संभावनाएं निहित होती हैं तो सफलता के लिए कलाकार को परीक्षणों, आलोचनाओं और आत्मालोचनाओं से गुजरना ही होगा। उससे की गई अपेक्षा एक ओर उसे कठिनाइयों से गुजारती है तो दूसरी ओर उसकी कला के साथ उसके व्यक्तित्व को भी निखारती-संवारती चलती है।

कुमारी जय चंदीराम की कला और अनुभूति उनके व्यक्तित्व के माध्यम से भी बोल रही थी। वह अपने कार्य में सहज थीं, बातचीत में सहज थी और पुरूष-प्रधान इस कला क्षेत्र में, जहां लंबे कार्य घंटों में निरंतर श्रम, ध्यान और सतर्कता के कारण पर्याप्त मानसिक व शारिरिक तनाव - थकान में से गुजरना पड़ता है, अपनी कार्य-क्षमता के प्रति आश्वस्त दिखी।

पर एक सफल कलाकार और अपने कार्यक्षेत्र की सफल अधिकारी होने के बावजूद व्यक्तिगत रूप से वह मानती थीं कि नारी का प्रथम स्थान उसका घर है और उसका प्रथम कर्तव्य है एक अच्छे घर-परिवार का निर्माण। भारतीय संस्कृति में, पश्चिमी संस्कृति के विपरीत, जो घर को प्रथम और कैरियर को द्वितीय स्थान दिया गया है, वह उचित ही है। कैरियर की सफलता घर की कीमत पर नहीं आंकी जा सकती। इस दृष्टि से अधिक ध्यान और अधिक समय मांगने वाला

यह कार्यक्षेत्र किसी भी सामान्य महिला के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। विशेष प्रतिभा-क्षमता से संपन्न युवतियों को ही इस ओर आना चाहिए।

अब तक देश में दूरदर्शन केंद्रों और कार्यक्रमों का काफी विस्तार हो चुका था और एक स्टेशन डायरेक्टर के रूप में उसकी जिम्मेदारी अपेक्षाकृत बढ़ चुकी थी। कुमारी जय चंदीराम की जुलाई 1987 से दिल्ली दूरदर्शन की स्टेशन डायरेक्टर के रूप में पदोन्नति एक ओर हम सब महिलाओं के लिए गौरव की बात थी, दूसरी ओर उनके लिए एक अपेक्षाकृत बडी चुनौती का प्रश्न भी। पर उनसे मिलकर ऐसा नहीं लगा कि वह विशेष चिंतित या तनावग्रस्त हैं। खूब मेहनत की उन्हें आदत है। 8:30 बजे से कार्यालय आकर बैठ जाती थीं और देर रात तक काम करती रहती थीं। उनके पास गहरा आत्मविश्वास भी दिखा, कार्यक्रमों में उत्तरोत्तर सुधार के लिए विशेष परिकल्पनाएं भी। शादी उन्होंने नहीं की थी, करने का इरादा भी नहीं बताया था। कार्य-कुशल व कार्य के प्रति समर्पित ('महत्वाकांक्षी' शब्द पर उन्हें आपत्ति थी) युवतियों के लिए यह कोई अनिवार्यता नहीं। क्या महिला स्टेशन डायरेक्टर के रूप में भी वह भारत में प्रथम हैं? पूछने पर उन्होंने कहा, ''नहीं, कटक और मद्रास स्टेशनों पर इसके पूर्व महिलाओं की नियुक्ति हो चुकी है। कुमारी जय चंदीराम इसके पूर्व मलेशिया में रहकर एशिया पेरीलिक इंस्टीट्यूट फॉर ब्रॉडकास्टिंग में रहकर पूर्वेशियाई देशों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही थीं।

******

'संगत का असर'

एक अध्यापक अपने शिष्यों के साथ घूमने जा रहे थे। रास्ते में वे अपने शिष्यों को अच्छी संगत की महिमा समझा रहे थे। लेकिन शिष्य इसे समझ नहीं पा रहे थे। तभी अध्यापक ने फूलों से भरा एक गुलाब का पौधा देखा। उन्होंने एक शिष्य को उस पौधे के नीचे से तत्काल एक मिट्टी का ढेला उठाकर ले आने को कहा।

जब शिष्य ढेला उठा लाया तो अध्यापक बोले - " इसे अब सूंघो ।"

शिष्य ने ढेला सूंघा और बोला - " गुरु जी इसमें से तो गुलाब की बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है ।"

तब अध्यापक बोले- "बच्चो! जानते हो इस मिट्टी में यह मनमोहक महक कैसे आई? दरअसल इस मिट्टी पर गुलाब के फूल, टूट टूटकर गिरते रहते हैं, तो मिट्टी में भी गुलाब की महक आने लगी है क्योंकि ये असर संगत का है और जिस प्रकार गुलाब की पंखुड़ियों की संगति के कारण इस मिट्टी में से गुलाब की महक आने लगी उसी प्रकार जो व्यक्ति जैसी संगत में रहता है उसमें वैसे ही गुणदोष आ जाते हैं।

******

रिश्तों का अंतर - जंतर

शशीकांत भारती
भाई श्री चक्षुराजा,
कनि.सहायक (वित्त)

किसी से दर्द का रिश्ता होता है,
किसी से प्यार का रिश्ता होता है,
फर्क क्या है, दोनों में
क्या है, अन्तर ।।
'रिश्ता' तो होता है,
किसी को याद करते हैं, जख्म जैसे
किसी को याद करते हैं, दवा जैसे
फर्क है, कुछ तो बोलो
बतलाओ क्या है, अन्तर।।
याद तो करते हैं दोनों को ही,
कोई दिल में रहता है, दुश्मन की तरह
कोई दिल में रहता है, दोस्त की तरह
कुछ भी फर्क नहीं इसमें|
ना ही है कोई अन्तर ।।
दिल में तो रहते हैं दोनों ही,
याद करते हैं, सोचते हैं सबको
एक साँस से.... दूसरी साँस तक
और फिर अन्तिम साँस तक।
तानाबाना बुनते रहते हैं, रिश्तों के
सभी एक दुसरे के पूरक ।।
इसके बिना वो नहीं, उसके बिना ये नहीं
सब एक ही माला के मोती
कोई सुंदर, कोई बदसूरत
कोई कठोर, कोई नरम
कोई कड़वा, कोई मधुर
फर्क क्या है? इसमें कुछ
क्या है अन्तर ।।
'रिश्ता' तो सबसे है
यादें तो सबसे जुड़ी हैं,
कुछ भयानक, कुछ सुंदर
इसके बिना वो नहीं, उसके बिना ये नहीं ।।
बस यही है रिश्तों का अंतर-जंतर ।।

*****

विद्वता

के.एन.द्विवेदी
वरि. आरेखण अधिकारी

पूर्व समय में एक साधू के आश्रम में कुछ विद्यार्थी पढ़ाई करते थे। आश्रम जंगल में ही था। साधू महाराज ने विद्यार्थियों को बातों-बातों में बताया कि कभी अगर श्याम चिरइया नाम का पक्षी दिखाई दे तो उस के बाएँ तरफ से निकल जाना। अभीष्ट फल मिलेगा। ऐसा ही एक वाक्या एक विद्यार्थी के साथ हो गया और वो उस पक्षी को बायाँ करके चलता गया। चलते-चलते रात हो गयी और वो भी एक शहर में पहुँच गया। पैदल चल कर वो बुरी तरह से थक गया और एक धर्मशाला में रुक गया। भूखा और थका होने से उस को जल्दी नींद आ गयी और सो गया।

उसी शहर में एक सेठ की लड़की की शादी थी। दरअसल उस की शादी नहीं हो रही थी और सेठ बहुत परेशान था। सेठ ने अपने कुलपुरोहित को ये ज़िम्मेदारी दी थी कि लड़की के लिए वर अच्छा और पढ़ा लिखा होना चाहिए। पुरोहित भी परेशान हो गया किन्तु वर पसंद का नहीं मिल रहा था। उस ने भी सेठ को धोखा देने की बात सोच ली कि जैसे भी हो अंधा, गूंगा, लंगड़ा मिल जाए तो इसकी शादी उसी से करवा दूंगा, कोई बात नहीं जब फेरे होने वाले होंगे तब किसी ठीक-ठाक से लड़के को मंडप में बैठा देंगे और शादी हो जाएगी। एक अंधा लड़का मिल गया और पुरोहित ने बात पक्की करवा दी।

आज उस सेठ की लड़की की शादी थी। बारात दुल्हन के घर पहुँच चुकी थी। उस जमाने में रात को ज्यादा रोशनी भी नहीं होती थी। दूल्हे ने मुकुट और सेहरे से पूरा मुंह ढक रखा था। चेहरा पूरा नजर नहीं आ रहा था। सब लोग दूल्हे का चेहरा देखने को लालायित थे। बारात का स्वागत हुआ। अब रात को जब फेरे होने थे तो उस समय के लिए पुरोहित ने किसी बाराती को पूछा कि थोड़ी देर के लिए दूल्हा बन जाओ, किन्तु कोई भी तैयार नहीं हुआ। फिर उसने अपने दो चार लोगों को कहा कि भाई इज्जत का सवाल है, कहीं से भी कोई इस की कद काठी का लड़का ढूंढ लाओ। मैं उस को 1000 रुपये दूंगा। फिर तो वो सब किराए के लड़के को ढूँढने निकल पड़े। ढूंढते-ढूंढते वो लोग उसी धर्मशाला में पहुँच गए जहां वो विद्यार्थी लेटा हुआ था। उन्होंने उस को जगाया और बताया कि तू थोड़ी देर के लिए दूल्हा बन जा, तुझे 1000 रुपये मिलेंगे। वो तैयार हो गया और उन के साथ चल पड़ा।

वहाँ शादी के मंडप में जाकर उस को दूल्हे के कमरे में ले गए और दूल्हे के कपड़े पहना कर तैयार कर दिया। अंधे को वहीं बैठा दिया कि बाहर मत निकलना । अब जैसे ही फेरों का वक्त

आया दुल्हन सज-धज के शादी की बेदी पर आ गयी और फेरे शुरू हो गए। दुल्हन ने देखा कि ये दूल्हा लड़खड़ा कर चल रहा है, जबकि वो तो भूख और थकान की वजह से लड़खड़ा रहा था। खैर शादी सम्पन्न हुयी। फिर दूल्हे को एक कमरे में भेज दिया कि थोडा़ आराम कर लो। किन्तु दूल्हा तो थका था, उसने देखा, सुंदर पलंग बिछा है और वो उस पर जाते ही सो गया।

दुल्हन जब वहाँ दूल्हे के कमरे में गयी तो देखा, दूल्हा सो रहा है। उसने उस को जगाने की बहुत कोशिश की किन्तु वो नहीं उठा। दुल्हन थक हार कर जाने लगी तो जाते-जाते उसने दूल्हे को एक श्लोक सुना दिया।

"भूषा भाषा दर्शने चारु रम्या:, वीणा वाणी शोभने याभिरामा:।" अर्थात कि मैं आभूषणों से सजी हूँ, मेरी भाषा बहुत सुंदर है। मेरी आवाज में सरस्वती का वास है। जो भी मुझे देखे, देखता ही रह जाए। जैसे ही ये बोल कर वो जाने लगी दूल्हा उठ कर खड़ा हो गया और बोला, लड़की जो तुमने कहा है वो फिर से दोहराओ। दुल्हन मना करने लगी कि नहीं-नहीं, गलती हो गयी, किन्तु दूल्हा जिद करने लगा कि नहीं फिर से बोलो, जो तुमने कहा। मजबूर होकर लड़की ने वही बात दोहरा दी। तब लड़के ने जवाब दिया।

"नो रोचन्ते क्षुधा-पिपासा तुराणाम, सर्वारम्भे तंडुलप्रस्थ मूले।" अर्थात कि ये सब कुछ भी अच्छा नहीं लगता, जब भूख और प्यास बुरी तरह से सता रही हो और जब तक दो दाने चावल के पेट में ना जाएँ। ऐसा सुनते ही दुल्हन को आश्चर्य हुआ और उसने जो चावल अपनी साड़ी के पल्लू पर बांधे थे, वहीं पर एक बर्तन में खीर बना कर उस को खिलाया और बाहर आकर अपनी माँ के पास चली गयी।

फिर रात में ही दूल्हा बदल दिया, पुरोहित ने उस किराए के लड़के को पैसा देकर रात में ही वापस भेज दिया। सुबह हुई फिर से वही अंधा दूल्हा, दुल्हन के साथ जब चलने लगा तो दुल्हन को शक हुआ कि ये वो दूल्हा तो नहीं है, जिस के साथ मेरे फेरे हुये हैं। इसकी आँखों पर तो पट्टी बंधी है, उस ने अपने पिताजी को बोला कि इस दूल्हे को ठीक से देखो, तो जब उन्होंने देखा कि ये तो अंधा लड़का है। दुल्हन ने कहा, पिताजी, रात में तो वो ठीक ठाक था, ये कौन सा है? हमारे साथ जरूर कोई धोखा हुआ है। धीरे-धीरे सारे बाराती खिसकने लगे, जब पुरोहित को पूछा तो वो भी कुछ जवाब नहीं दे पाया बस इतना बोला कि अब तो शादी हो गयी है इस लड़की को अब ये ही दूल्हा अपनाना पड़ेगा। दुल्हन ने मना कर दिया कि जिस के साथ मेरे फेरे हुये हैं, वही मेरा पति होगा।

इस तरह से पुरोहित को भी दुल्हन के पिता ने भगा दिया और सारे बाराती भी भाग गए।

अब सेठ की लड़की ने कहा कि पिताजी उस लड़के को ढूंढो, जिस के साथ मेरे फेरे हुये हैं, मेरी शादी उसी लड़के से होगी। किन्तु वो लड़का तो सुबह होते ही वापस आश्रम में चला गया। उन दिनों संचार व्यवस्था भी नहीं थी। वो लड़का कौन था? कहाँ से आया था? किसी को नहीं पता।

दूसरे दिन लड़की ने अपने पिताजी से कहा कि ऐसा करो, मैं एक श्लोक लिख कर देती हूँ, जो इस को पूरा कर दे, उस को 1000 रुपये इनाम दिया जाएगा। इस तरह की घोषणा पूरे शहर और गाँव में पत्र द्वारा पहुंचा दो ताकि वो लड़का ये पत्र पढ़ कर इनाम लेने जरूर आएगा।

सेठ जी ने वही किया। जगह-जगह पत्र लिख कर भिजवा दिये कि जो भी इस श्लोक को पूरा करेगा उस को 1000 रुपये इनाम दिया जाएगा। श्लोक वही था, "भूषा भाषा दर्शने चारु रम्या:, वीणा वाणी शोभने याभिरामा:" कई जगह से अलग-अलग तरह के जवाब आए किन्तु सही जवाब नहीं आया। होते करते कई महीने बाद एक पत्र उसी आश्रम में भी पहुँच गया। वहाँ के आचार्यों ने भी अपना-अपना जवाब लिख कर भेजा किन्तु सब बेकार।

एक दिन वो पत्र आश्रम के उसी आचार्य को भी पढ़ने को मिला। जहां वो लड़का पढ़ता था। उस ने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि है कोई जो इस श्लोक को पूरा कर दे। उस लड़के ने तुरंत जवाब दिया कि हाँ मैं इस को पूरा कर सकता हूँ। आचार्य उस को लेकर सेठ के पास गया । लड़की ने दूर से ही उस को देख लिया और अपने माँ-पिताजी से कहा कि हाँ ये ही वो लड़का है जिस से मेरी शादी हुयी थी। लड़का जब सेठ की कोठी पर गया और कहा कि बोलो आपका श्लोक क्या है? तो लड़की ने कहा कि श्लोक तो मै बोल दूँगी किन्तु आपको शादी भी करनी होगी। क्योंकि मेरे साथ फेरे तो आपने पहले ही ले लिए थे। इस तरह से लड़का मान गया और दोनों की शादी हो गयी।

भूषा भाषा दर्शने चारु रम्या:, वीणा वाणी शोभने याभिरामा:,
नो रोचन्ते क्षुधा-पिपासा तुराणाम, सर्वारम्भे तंडुलप्रस्थ मूले।

तात्पर्य ये है कि अगर इंसान बुद्धिमान हो तो वो अपनी विद्वता से पीछे नहीं हटता।

******

कार्य के मध्य में अति विलम्ब और आलस्य उचित नहीं है।
कार्य-सिद्धि के लिए हस्त-कौशल का उपयोग करना चाहिए।
- चाणक्य

चालाक चोर

साभार : विश्वप्रसिद्ध कहानियां
सं. सुरेश कांत

पुराने जमाने में रैंपसिनिटस नाम का एक राजा था। उसके पास बहुत बड़ा खजाना था। राजा ने अपने खजाने की सुरक्षा के लिए पत्थर की एक ऐसी बड़ी कोठरी बनवाने की सोची, जिसका एक सिरा उसके महल की बाहरी दीवार का एक हिस्सा हो।

कारीगर ने कोठरी बनानी शुरू कर दी। महल का बाहरी दीवारवाला हिस्सा बनाते समय उसके दिमाग में राजा का खजाना लूटने की बात आई और उसने उस दीवार में एक पत्थर इस तरह जमा दिया कि उसे वहां से आसानी से निकाला जा सके।

कोठरी कुछ दिनों में बनकर तैयार हो गई। राजा ने अपना खजाना वहां रखवा दिया। समय बीतता गया। कुछ समय बाद वह कारीगर बीमार पड़ गया। अपनी मृत्यु निकट देखकर उसने अपने दोनों बेटों को अपने पास बुलाया और उन्हें राजा के खजाने वाली कोठरी के पत्थर की बात बताई। उसने कहा, 'मैंने तुम्हारे लिये यह सब किया है। राजा के खजाने को लूटकर तुम सारी जिन्दगी मजे में बिता सकते हो। फिर उसने अपने बेटों को उस पत्थर को हटाने का तरीका बताया, जिसे उसने राजा के खजाने वाली कोठरी की दीवार में जमाया था। उसने उन्हें खजाने तक पहुंचने का सही रास्ता भी बता दिया। इसके बाद कुछ दिनों बाद उस कारीगर की मृत्यु हो गई।

बाप के मरते ही उसके बेटों ने राजा का खजाना लूटने में देरी नहीं की। एक रात वे छिपकर राजा के महल में जा पहुंचे और खजाने वाली कोठरी की दीवार में लगे उस पत्थर को हटाकर एक बड़ी रकम लूट कर ले गए।

एक दिन जब राजा उस कोठरी में गया तो उसे यह देखकर हैरानी हुई कि खजाने से बहुत-सा धन गायब है। उसकी समझ में यह नहीं आया कि चोर कोठरी में घुसा कैसे। न तो कोठरी की दीवार टूटी थी, न कोई सेंध लगी थी और कोठरी की सांकले तथा ताले भी ठीक तरह से बंद थे। इसके बाद राजा जब भी खजाने की कोठरी में जाता, उसे खजाना पहले से कम मिलता। चोर धीरे-धीरे उसका खजाना खाली करते जा रहे थे।

आखिर राजा ने चोरों को पकड़ने की ठान ली। उसने खजाने के पास जाल लगवा दिया। अगली बार जब चोर उसका खजाना लूटने गए, तब उनमें से एक चोर जैसे ही कोठरी के छोटे दरवाजे से भीतर घुसने लगा तो जाल में फंस गया।

उसने जाल में से निकलने की बहुत कोशिश की, पर निकल नहीं सका। हारकर उसने अपने भाई से कहा, ''मैं इस जाल में फंस गया हूं, मेरे छूटने की अब कोई उम्मीद नहीं है। यदि मैं पकड़ा गया और पहचान लिया गया तो, तुम भी मुसीबत में पड़ जाओगे। इसलिए अच्छा यही है कि तुम मेरा सिर काटकर अपने साथ ले जाओ, ताकि जब राजा के आदमियों को मेरी लाश मिले तो वो मुझे पहचान न पाएं। इस प्रकार तुम बच जाओगे।''

दूसरे चोर ने अपने भाई की सलाह मान ली और उसका सिर काटकर अपने साथ घर ले गया। सुबह होने पर जब राजा खजाने वाली कोठरी पर गया, तब एक चोर की बिना सिर वाली लाश को जाल में फंसा देखकर हैरान रह गया।

राजा ने तुरंत अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उस लाश को ले जाकर बीच चौराहे पर लटका दें और कोई व्यक्ति उस लाश को देखकर रोए, तो उसे पकड़कर फौरन दरबार में हाजिर करें। जब चोर की मां ने सुना कि उसके बेटे की लाश चौराहे पर लटकाई गई है, तो उसने अपने दूसरे बेटे से कहा, ''तुम कोई भी उपाय करके अपने भाई की लाश ले आओ।''

चोर ने मां को समझाया, ''उसकी लाश को लाना संभव नहीं है, वहां बहुत से पहरेदार खड़े हैं। इससे मेरी जान भी खतरे में पड़ सकती है।'' पर मां नहीं मानी और उसे अपनी मां की जिद के सामने झुकना पड़ा।

चोर अपने भाई की लाश लाने का उपाय सोचने लगा। उसने चमड़े की कुछ मशकों में शराब भरी और गधों पर लादकर उस जगह पहुंच गया, जहां उसके भाई की लाश लटक रही थी। वहां पहुंच कर उसने चुपचाप अपनी दो-तीन मशकों का मुंह ढीला कर दिया, जिससे उन मशकों में भरी शराब सड़क पर गिरने लगी। फिर वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा और अपना सिर पीटने लगा। पहरेदारों ने जब सडक पर बह रही शराब को देखा तो वे खुश हो गए। उन्होंने मौके का फायदा उठाया और मशकों से गिरती शराब को बरतनों में भरना शुरू कर दिया।

चोर उन पर बनावटी गुस्सा करने लगा और उन्हें बुरा-भला कहने लगा। पर मन-ही-मन वह खुश था कि उसकी चाल कामयाब रही है। मुफ्त की शराब के लालच में पहरेदार उसे शांत करने का प्रयत्न करने लगे। जब चोर का गुस्सा ठंडा हुआ, तब वह अपने गधों को सड़क के किनारे ले गया और उन पर लदी मशकों को ठीक-ठाक करने लगा। पहरेदार उसके साथ हंसी मजाक करने लगे। वे उसे खुश करने की कोशिश कर रहे थे, ताकि उन्हें मुफ्त की शराब पीने को मिल जाए।

चोर ने उन्हें एक मशक शराब उपहार में दे दी। वे वहीं बैठकर शराब पीने लगे। फिर उन्होंने चोर को भी अपने साथ शराब पीने के लिए बैठा लिया। चोर जल्दी ही उनके साथ घुल-मिल गया।

इसके बाद उसने पहरेदारों को शराब की एक मश्क और उपहार में दे दी। पहरेदारों ने वह भी पी डाली। फिर पहरेदार शराब के नशें में धुत होकर वहीं गिर पड़े और उन्हें होश नहीं रहा। चोर ने अंधेरा होने का इंतजार किया। अंधेरा होने पर वह अपने भाई की लाश लेकर घर आ गया।

जब राजा ने सुना कि चोर पहरेदारों को धोखा देकर लाश को उठा ले गया, तो उसे बहुत गुस्सा आया। राजा चोर को किसी भी तरह से पकड़ना चाहता था। उसने एक नई तरकीब सोची। उसने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि जो आदमी राजकुमारी को अपने जीवन में घटी बहुत ही दुष्टता और चतुराई वाली घटना सुनाएगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया जाएगा। इसके बाद राजा ने राजकुमारी से कहा, ''यदि कोई व्यक्ति तुम्हें उस चोर की कहानी सुनाए तो उसे पकड़ लेना। उसे भागने मत देना।

दूसरी तरफ चोर ने भी यह घोषणा सुनी। वह समझ गया कि राजा ने उसे पकड़ने के लिए ही यह चाल चली है। चोर ने फैसला किया कि वह अपनी चतुराई से एक बार फिर राजा की चाल को नाकाम कर देगा। चोर ने योजना बनाई, उसने कहीं से एक ताजा लाश ली और उसका एक हाथ कंधे तक काट लिया। उस हाथ को वह अपने कपड़ों के भीतर छिपाकर राजकुमारी के पास पहुंचा।

राजकुमारी ने उससे पूछा, कि उसके जीवन में कौन-सी बहुत ही दुष्टता और चतुराई वाली घटना घटी है?

चोर ने कहा, ''मैंने अपने जीवन में सबसे ज्यादा दुष्टता का काम तब किया था, जब मैंने राजा के खजाने के पास जाल में फंसे अपने भाई का सिर काट दिया था और बहुत ही चतुराई का काम तब किया था, जब मैं राजा के पहरेदारों को मूर्ख बनाकर अपने भाई की लाश उठाकर ले गया था।''

चोर के मुंह से यह सुनते ही राजकुमारी ने उसका हाथ पकड़ लिया। लेकिन चोर ने जल्दी से राजकुमारी को अपने कपड़ों के भीतर छिपा कटा हाथ पकड़ा दिया और वहां से भाग गया।

राजा ने जब यह घटना सुनी तो वह चोर की हिम्मत और चतुराई देखकर दंग रह गया। उसने अपने राज्य में चारों तरफ ढिंढोरा पिटवा दिया कि यदि वह चोर स्वयं उसके सामने आ जाए, तो वह उसे माफ कर देगा और उसे बहुत सा इनाम भी देगा। साथ ही राजकुमारी का विवाह भी उसके साथ कर देगा।

चोर ने राजा की घोषणा सुनी। वह निडर होकर राजा के सामने गया। राजा को हारकर अपने वादे के अनुसार राजकुमारी का विवाह उसके साथ करना पड़ा।

******

पानी हमेशा घूँट-घूँट करके और बैठ कर पिएं

डी.के.सेठी
उप प्रबन्धक (रा.भा.)

दोस्तों जैसा कि आप सभी जानते हैं कि पानी का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। हमें पानी सदैव धीरे-धीरे अर्थात घूँट-घूँट करके पीना चाहिये। यदि हम धीरे-धीरे पानी पीते हैं तो उसका एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि हमारे हर घूँट के साथ मुँह की लार पानी के साथ मिलकर पेट में जायेगी और हमारे पेट में बनने वाले अम्ल को शान्त करेगी क्योंकि हमारी लार क्षारीय और बहुत मूल्यवान होती है। हमारे पित्त को संतुलित करने में इस क्षारीय लार का बहुत योगदान होता है। जब हम भोजन चबाते हैं तो वह लार में ही लुगदी बनकर आहार नली द्वारा अमाशय में जाता है और अमाशय में जाकर वह पित्त के साथ मिलकर पाचन क्रिया को पूरा करता है। इसलिये मुँह की लार अधिक से अधिक पेट में जाये इसके लिये पानी घूँट-घूँट करके और बैठकर पीना चाहिये।

हमें कभी भी पानी खड़े होकर नहीं पीना चाहिए। बैठकर पानी पीने से घुटनों में होने वाले दर्द से बचा जा सकता है। कभी भी बाहर से आने पर जब हमारा शरीर गर्म हो या श्वाँस तेजी से चल रही हो, तब थोड़ा रुककर, शरीर का ताप सामान्य होने पर ही पानी पीना चाहिए। भोजन करने से लगभग एक घंटा पहले पानी अवश्य पियें इससे भोजन के समय प्यास नहीं लगेगी।

प्रातः काल उठते ही सबसे पहले बिना मुँह धोए, बिना ब्रश किये कम से कम एक गिलास पानी अवश्य पियें क्योंकि सुबह की लार बहुत कीमती होती है जो पानी के साथ पेट में जाकर पाचन संस्थान को रोगमुक्त करती है।

सुबह उठकर मुँह की लार आँखों में भी लगाई जा सकती है क्योंकि यह काफी क्षारीय होती है इसलिए आँखों की ज्योति और काले सर्किल के लिए काफी लाभकारी होती है। दिन भर में कम से कम तीन लीटर पानी अवश्य पियें। किडनी में स्टोन ना बने इसके लिये यह अति आवश्यक है कि अधिक मात्रा में पानी पीया जाए और अधिक बार मूत्र त्याग किया जाए।

आयुर्वेद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर के भार के 10 वें भाग से 2 को घटाने पर प्राप्त मात्रा जितना पानी पीना चाहिए, जैसे अगर आपका भार 60 किलो है तो उसका 10 वां भाग 6 होगा और उसमें से 2 घटाने पर प्राप्त मात्रा 4 लीटर होगी। यह कब्ज, अपच आदि रोगों में रामबाण पद्धति है, इससे मोटापा कम करने में भी सहायता मिलेगी। जिनका पित्त अधिक बनता है उनको भी लाभ होगा।

****

कैलास-मानसरोवर

साभार : हमारे तीर्थस्थल
डा. पवित्र कुमार शर्मा

भारतीय धर्म-ग्रन्थों में कैलास-मानसरोवर तीर्थ की महिमा का काफी वर्णन किया गया है। महाभारत के वनपर्व में कहा गया है कि पितामह और सावित्री तीर्थ के बाद मानसरोवर को जाना चाहिए। वहां स्नान करके व्यक्ति रूद्रलोक में प्रतिष्ठित होता है।

वाल्मीकि रामायण के बाल-काण्ड में कहा गया है :

विश्वामित्र मुनि कहते हैं 'राम! कैलास पर्वत पर ब्रह्मा की इच्छा से निर्मित एक सरोवर है। मन से निर्मित होने के कारण इसका नाम मानस सर या मानसरोवर विख्यात है।'

स्कन्दपुराण तथा हरिवंशपुराण में कैलास-मानसरोवर तीर्थ का उद्भव श्रीविष्णु महाराज की नाभि से बताया गया है। देवीभागवत तथा श्रीमद् भागवत में कैलास तीर्थ को सिद्ध और महात्माओं का निवास स्थल कहा गया है। श्रीमद् भागवत में इसे भगवान शिव का निवास तथा अतीव रमणीय स्थल बताया गया है, जहां मनुष्यों का निवास सम्भव नहीं हो पाता।

गोस्वामी तुलसीदास कैलास तीर्थ की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं

परम रम्य गोधर कैलासू ।
सदा जहां शिव हुआ निवासू ।।

कैलास जैन तीर्थों में भी माना जाता है। यह एक सिद्ध क्षेत्र है, जहां आदि तीर्थ स्वामी मोक्ष या मुक्ति को प्राप्त हुए थे।

कैलास-मानसरोवर यात्रा

हिमालय की पर्वतीय यात्राओं में मानसरोवर- कैलास की यात्रा सबसे कठिन मानी जाती है। इस यात्रा में यात्री को लगभग तीन सप्ताह तिब्बत में रहना पड़ता है। केवल यही एक यात्रा है जिसमें यात्री हिमालय को पूरा पार करता है। इस तीर्थयात्रा में यात्री यदि ऑक्सीजन मॉस्क साथ ले जाए तो उसे तीर्थयात्रा के दौरान खास कष्ट का सामना नहीं करना पड़ता।

कैलास-मानसरोवर तीर्थ पहुंचने के लिए यात्री भारत के कई मार्गों से होकर जाते हैं। तीर्थ यात्रियों के लिए मुख्यत: तीन मार्ग हैं:-

1. पूर्वोत्तर रेलवे टनकपुर स्टेशन से मोटर, बस द्वारा पिथौरगढ (अल्मोड़ा) जाकर फिर वहां से पैदल यात्रा करते हुए 'लिपू' नामक दर्रा पार करके जाने वाला मार्ग है।
2. काठगोदाम स्टेशन से मोटर, बस द्वारा कपकोट (अल्मोड़ा) जाकर फिर पैदल यात्रा करते हुए 'ऊटा', 'जयन्ती' तथा 'कुगंरी द्विंगरी' घाटियों को पार करके जाने वाला मार्ग है।
3. उत्तर रेलवे के ऋषीकेश स्टेशन से मोटर, बस द्वारा जोशी मठ जाकर, वहां से पैदल यात्रा करते हुए 'नीतो' की घाटी को पार करके पैदल जाने वाला मार्ग है।

कैलास-मानसरोवर की तीर्थयात्रा के लिए यात्री को चाहे किसी भी मार्ग से जाना पड़े, उसे किसी प्रकार का पास, परमिट या आज्ञापत्र अपने साथ नहीं ले जाना पड़ता।

उपर्युक्त तीनों मार्गों में तीर्थयात्री को भारतीय सीमा का जो अन्तिम बाजार मिलता है, वहां तक उसे ठहरने का स्थान, भोजन का सामान तथा भोजन बनाने की सुविधा मिल जाती है। यहां तक उसे किसी मार्गदर्शक की जरूरत नहीं होती और न ही अन्य किसी प्रकार की कठिनाई होती है। चूँकि पर्वतीय प्रदेश का यह एक ही मार्ग होता है, इसलिए मार्ग से भटकने का भय भी नहीं रहता। सामान आदि को ढोने के लिए कुली तथा सवारी आदि का सहारा लेना पडता है। चूँकि कैलास-मानसरोवर तीर्थ तिब्बत की सीमा में आता है, इसलिए तीर्थयात्रियों को भारतीय सीमा के अन्तिम बाजार से तिब्बत प्रदेश में पूरे समय तम्बू में रहना पड़ता है, इसलिए तम्बू भारतीय सीमा के अन्तिम बाजार से ले जाना पडता है। तिब्बती सर्दी से बचने के लिए किराए का मोटा कम्बल तथा भोजन बनाने के लिए बर्तन भी अपने साथ ले जाने पड़ते हैं।

कैलास-मानसरोवर की यात्रा में लगभग डेढ़ या दो महीने का समय लग जाता है। करीब साढे चार सौ मील (725 कि.मी.) पैदल या घोडे, याक आदि की पीठ पर चलना पड़ता है। बहुत मोटे शरीर वालों को, श्वास या हृदयरोग के मरीजों को यह यात्रा नहीं करनी चाहिए। वृद्धों के लिए तथा छोटे बालकों के लिए भी यह तीर्थ यात्रा कठिन होती है।

मानसरोवर तीर्थ

पूरे हिमालय को पार करके, तिब्बती पठार में लगभग तीस मील(48 कि.मी.) जाने पर पर्वतों से घिरे दो महान सरोवर मिलते हैं। इनमें से एक राक्षस ताल है तथा दूसरा मानसरोवर । राक्षस ताल विस्तार में बहुत बडा है। वह गोल या चौकोर नहीं है। उसकी भुजाएं मीलों दूर तक टेढी-मेढी होकर पर्वतों में चली गई हैं। कहते हैं कि किसी समय राक्षसराज रावण ने यहीं खडे होकर

भगवान शिव की आराधना की थी। दूसरा सरोवर गोल या अण्डाकार है। इस सरोवर का बाहरी घेरा 22 मील (35 कि.मी.) का है। मानसरोवर 51 शक्तिपीठों में से एक है। सती की दाहिनी हथेली इसी शक्तिपीठ में गिरी थी।

मानसरोवर में राजहंस आदि कई प्रकार के हंस पाए जाते हैं। एक समय मानसरोवर का जल राक्षस ताल में जाता था। जलधारा का वह स्थान अब काफी ऊँचा दिखाई देता है। मानसरोवर से कोई नदी अथवा झरना तो नहीं निकलता, लेकिन यह सरोवर ऊँचाई पर स्थित है।

मानसरोवर के आस पास या कैलास पर न तो कोई वृक्ष है और न ही कोई पुष्प वहां खिलता है। छोटी घास और सवा फुट (38 सें.मी.) तक ऊँची कंटीली झाड़ियों को छोड़कर वहां किसी प्रकार का पौधा नहीं उगता। मानसरोवर का जल सामान्य रूप से शीतल है। उसमें सरलता से आनन्दपूर्वक स्नान किया जा सकता है। मानसरोवर के तट पर रंग-बिरंगे पत्थर और स्फटिक के छोटे-बडे टुकडे भी पाए जाते हैं।

कैलास तीर्थ

कैलास तीर्थ, मानसरोवर से बीस मील (32 कि.मी.) की दूरी पर है। मानसरोवर तीर्थ पहुंचने से पहले ही कैलास पर्वत के दर्शन होने लगते हैं। तिब्बत के लोगों में कैलास के प्रति अपार श्रद्धा है। कई तिब्बतीय श्रद्धालु कैलास पर्वत की पूरी बत्तीस मील (51.5 कि.मी.) की परिक्रमा दण्डवत् लेटते हुए करते हैं।

कैलास पर्वत को शंकर जी का दिव्य धाम होने का गौरव प्राप्त है। कैलास पर्वत असामान्य है। यह सभी हिमशिखरों से बिलकुल भिन्न तथा दिव्य प्रकार का है। कैलास पर्वत की आकृति विराट शिवलिंग जैसी है। यह शिवलिंग पर्वतों से बने एक षोडशदल कमल के बीच रखा है।

शिवलिंगाकार कैलास पर्वत आसपास के समस्त शिखरों से ऊँचा है। यह पर्वत काले पत्थर का बना हुआ है तथा ऊपर से लेकर नीचे तक दूध के समान सफेद और उज्ज्वल बर्फ से ढका हुआ है। इस पर्वत से लगे हुए जिन पर्वतों के शिखर कमलाकार हैं, वे पत्थर कच्चे तथा मटमैले पत्थरों से निर्मित हैं। आस-पास के अन्य सभी पर्वत इसी तरह कच्चे पत्थरों के बने हुए हैं। केवल एक अकेला कैलास पर्वत ही है, जो ठोस काले पत्थर के शिखर वाला है। कच्चे पत्थरों के बने अन्य पर्वत, जो कमलाकार शिखर वाले हैं, उनके शिखर प्राय: गिरते रहते हैं। एक ओर के चार पंखुडियों-वाले पर्वत-शिखर अब काफी हद तक गिर चुके हैं।

भव्य और उन्नत कैलास पर्वत के शिखर के चारों कोनों में प्राकृतिक रूप से मन्दिरों जैसी आकृतियां बन गई हैं। ये आकृतियां उस तरह की हैं जैसी कि मन्दिरों के शिखरों पर चारों ओर बनी रहती हैं।

कैलास तीर्थ की परिक्रमा 32 मील (लगभग 51 कि.मी.) की है। इस परिक्रमा को तीर्थयात्री तीन दिनों में पूरा करते हैं। यह परिक्रमा कैलास-पर्वत के शिखर तथा उसके चारों ओर के कमलाकार शिखरों के संग ही होती है। कैलास-पर्वत का शिखर अस्पृश्य है। इस महान् पर्वत का स्पर्श यात्रा-मार्ग की लगभग डेढ़ मील (2.5 कि.मी.) की सीधी चढाई पार करके ही किया जा सकता है। यह चढाई तभी की जा सकती है, जब पर्वतारोहण का विशेष अभ्यास तीर्थयात्री को हो।

कैलास पर्वत के शिखर की ऊँचाई समुद्र तल से 19000 फीट (5791 मीटर) है। जिन पुण्यशाली लोगों ने कैलास-मानसरोवर तीर्थों की यात्रा की है, उनका मानना है कि वहां अद्भुत शान्ति तथा पवित्रता का अनुभव होता है। इस महान तीर्थ के दर्शन से मन को विश्राम एवं आनन्द प्राप्त होता है।

*****

दादी मां के नुस्खे

दाँत दर्द : अमरूद के पत्तों का काढ़ा बनाकर दिन में चार बार गरारे करें। इससे दाँत दर्द और मसूड़ों से खून रिसने की शिकायत दूर होती है।

पेट में गैस की तकलीफ : एक कप गरम पानी में आधा नींबू निचोड़ लें। एक सप्ताह तक लगातार पीने से गैस की समस्या दूर हो जाती है।

कील मुहांसे : नीम की सूखी छाल पर पानी डाल कर घिस लें। गाढ़ा लेप बन जाने पर चेहरे पर लगाएं। फिर पाँच मिनट बाद ताजे पानी से धो लें। यह प्रयोग कुछ दिनों तक नियमित करने से कील-मुहांसे दूर हो जाते हैं।

कब्ज : हींग, सोंठ व मुलहठी बराबर-बराबर मात्रा में कूट-पीस कर शहद मिला कर छोटी-छोटी गोलियां बना लें। सुबह-शाम दो-दो गोलियां चूसते रहने से कब्ज मिटती है।

जुकाम : यदि अमरूद के फल को गरम राख या बालू में भूनकर खाया जाए तो पुराने से पुराना जुकाम भी शीघ्र नष्ट हो जाता है।

आपके पत्र

रेलटेल
RAILTEL
A mini ratna enterprise

सं.रेलटेल/2013/हिंदी/विविध

दिनांक 10.06.19

प्रमुख रा.भा.का.
वाप्कोस लिमिटेड
76-सी, सैक्टर-18
गुरूग्राम -122015

संदर्भ:- आपका दिनांक 12.02.2019 का पत्रांक 07/365/2018-हिंदी

महोदय,

वाप्कोस लिमिटेड द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक गृह पत्रिका **वाप्कोस दर्पण** के 90वें अंक (जुलाई – सितम्बर, 2018 (राजभाषा विशेषांक) की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई .

स्वास्थ्य रक्षा संबंधी लेख दैनिक जीवन के लिए बहुत लाभकारी है तथा पालक के गुणों का किया गया उल्लेख स्वास्थ के लिए हितकर है. राजभाषा प्रयोग प्रसार के लिए दर्शायी गई गतिविधियाँ सराहनीय हैं.

(सी.एल. भारद्वाज)
वरिष्ठ प्रबंधक/कार्मिक एवं प्रशा

रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (भारत सरकार का उपक्रम)
RailTel Corporation of India Ltd. (A Government of India Undertaking)
CIN : U64202DL2000GOI107905
Corporate Office : 143, Institutional Area, Sector-44, Gurugram - 122 003, NCR (India). T : +91 124 2714000, F +91 124 4236084
Regd. Office : 6th Floor, IIIrd Block, Delhi Technology Park, Shastri Park, Delhi - 110053
Website : www.railtelindia.com

चिंता से मुक्ति	**कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल, मानेसर** (श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार) प्लाट सं – 41, सेक्टर – 03, आई.एम.टी. मानेसर, गुडगाँव, हरियाणा – 122050 दूरभाष: 0124-4152500 ई-मेल: **ms-manesar.hr@esic.nic.in**	आई.पी. हमारा वी.आई.पी

सं: ए.133.49.1.2016-रा.भा.(गृह पत्रिका) दिनांक: 25.06.2019

सेवा में,

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक,
वाप्कोस लिमिटेड,
76-सी, इंस्टिट्यूश्नल एरिया,
सेक्टर – 18,
गुरुग्राम – 122015

विषय- गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' अक्टूबर, 2018 से मार्च, 2019 (संयुक्तांक-91 व 92) |

महोदय,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का संयुक्तांक प्राप्त हुआ | हार्दिक धन्यवाद | कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा पत्रिका प्रकाशन में दिए योगदान से पत्रिका अविस्मरणीय बन गई है |

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानी, कविता एवं रिपोर्ट सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक है | छायाचित्रों ने पत्रिका को रोचक एवं रमणीय बना दिया है|

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाईयाँ एवं आगामी अंक हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ |

शुभेच्छु,

(रूपा बैनर्जी)
उप निदेशक (रा.भा. प्रभारी)

भारत डायनामिक्स लिमिटेड
BHARAT DYNAMICS LIMITED
भारत सरकार का उद्यम
Govt. of India Enterprise
रक्षा मंत्रालय
Ministry of Defence
कंचनबाग, हैदराबाद - 500 058. टि.एस, भारत.
Kanchanbagh, Hyderabad - 500 058. T.S. INDIA

CIN : U24292TG1970GOI001353

बीडीएल/10010406/35/2019

दि: 15/05/2019

सेवा में,

श्रीमती निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.) एवं
संपादक, 'वाप्कोस दर्पण'
वाप्कोस लिमिटेड,
नयी दिल्ली - 110001.

महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका **"वाप्कोस दर्पण"** का संयुक्तांक 91-92 प्राप्त कर आनंद का अनुभव हुआ। सर्व प्रथम आपको **राजभाषा वैजयंती पुरस्कार** के लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका के माध्यम से क्षेत्रीय कार्यालयों में संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन की जानकारी मिली। पत्रिका में शामिल लेख ज्ञानवर्द्धक व जानकारीपद हैं। सभी कविताएँ पठनीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

15/5/19

(होमनिधि शर्मा)
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन - राजभाषा) एवं
सदस्य सचिव, न.रा.का.स.(3)

टेलिफोन Tel. :
ईमेल E-mail :
फैक्स Fax :
वेबसाईट Website : http://bdl.ap.nic.in

- कुमारी रिद्धिमा शर्मा
सुपुत्री गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिंदी)
वाप्कोस लिमिटेड

।। गोपालदास "नीरज" ।।

(4 जनवरी, 1925 से 19 जुलाई, 2018)

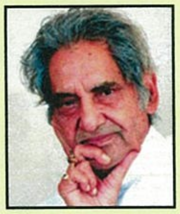

गोपालदास सक्सेना 'नीरज' का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के पुरावली गाँव में हुआ था। मात्र 6 वर्ष की आयु में पिता गुजर गये। 1942 में एटा से हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। श्री नीरज ने प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एम.ए. किया और मेरठ कॉलेज, मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया। कवि सम्मेलनों में अपार लोकप्रियता के चलते नीरज को बम्बई के फिल्म जगत ने गीतकार के रूप में नई उमर की नई फसल के गीत लिखने का निमन्त्रण दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। किन्तु बम्बई की ज़िन्दगी से भी उनका मन बहुत जल्द उचट गया और वे फिल्म नगरी को अलविदा कहकर फिर अलीगढ़ वापस लौट आये। पद्म भूषण से सम्मानित कवि, गीतकार गोपालदास 'नीरज' को विश्व उर्दू परिषद् पुरस्कार, पद्मश्री सम्मान, भारत सरकार, यश भारती पुरस्कार तथा फिल्म फेयर पुरस्कार व सम्मान भी प्राप्त हुए।

जब चले जाएँगे हम लौट के सावन की तरह

जब चले जाएँगे हम लौट के सावन की तरह
याद आयेंगे प्रथम प्यार के चुम्बन की तरह ।

ज़िक्र जिस दम भी छिड़ा उनकी गली में मेरा,
जाने शरमाए वो क्यूँ गाँव की दुल्हन की तरह ।

मेरे घर कोई खुशी आती तो कैसे आती?
उम्र-भर साथ रहा दर्द महाजन की तरह ।

कोई कंघी न मिली जिससे सुलझ पाती वो,
ज़िंदगी उलझी रही ब्रह्म के दर्शन की तरह ।

दाग मुझमें है कि तुझमें ये पता तब होगा,
मौत जब आएगी कपड़े लिए धोबन की तरह ।

हर किसी शख्स की किस्मत का यही है किस्सा,
आए राजा की तरह, जाए वो निर्धन की तरह ।

जिसमें इन्सान के दिल की न हो धड़कन 'नीरज'
शायरी तो है वो अखबार के कतरन की तरह ।

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti
ISO 9001:2015
पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–18, गुड़गांव–122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392
ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in